

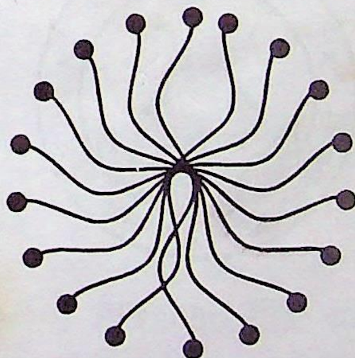






नवग्रह पूजा

नवग्रह पूजन विधि



लेखकः
ओंकार नाथ शास्त्री

नोट : इस पुस्तक का कैसट् भी आपको मिल सकता है।



मूल्य : **80** रुपये

प्रकाशक
विजयेश्वर पंचांग कार्यालय
अजीत कॉलोनी, गोलगुजराल, जम्मू
स्वरदूत : 555607, 9419133233
E-mail : omvijayshwer@yahoo.com

नव ग्रह पूजन

ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का प्रभाव चराचर सृष्टि पर पड़ता है पूरे संसार में प्राचीन काल से नव ग्रहों की पूजा इत्यादि का प्रचलन है इस के मूल में हम लोगों के शरीर से नव ग्रहों का सम्बन्ध और ज्योतिष की दृष्टि से सुपुष्ट विचार भी हैं यह उक्ति प्रायः सर्वत्र प्रसिद्ध है कि **'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'** अर्थात् जो कुछ एक शरीर में है वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है वह एक शरीर में भी है सभी ग्रह अपनी-अपनी गति से सूर्य की ओर बढ़ रहे हैं पृथ्वी के साथ सब का सम्बन्ध है अलग-अलग अरिष्ट के अनुसार तथा प्रत्येक शान्ति के लिये इन की पूजा होती है प्रत्येक व्यक्ति अपने दुःखों को दूर करने के लिये कुछ न कुछ करना चाहता हैं, ग्रहों को शान्त करने के लिये मैं यह नव ग्रहों की पूजा पद्धति लोगों की सुविधा के लिये प्रकाशित कर रहा हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि पूरा समाज इस पुस्तक से लाभान्वित हो जायेगा।

नोटः यदि आप नव ग्रहों का पुष्पार्चन करना चाहते है तो आप किसी प्रकार की सामग्री न लाये केवल फूल लाये और कलश के लिये मिट्टी का मटका, 1 दीप, अखरोट 50, और 1 डिब्बा धूप और तिलक के लिये सिन्दूर लाये।

यदि आप पुष्पार्चन करेंगे तो आप कलशपूजा के

पश्चात अपने सामने नवग्रह मण्डल का चित्र चूने से या चावल के आटे से बनाये जो पुस्तक में बनाया गया है यदि आप के पास विष्णु का फोटू होगा तो नवग्रह मण्डल के समाने सजाके रखें। दूप, दीप जलाकर आप पुष्पार्चन आरम्भ कर सकते है। पुष्पार्चन में स्वाहा के बदले नमः का प्रयोग करना चाहिए।

आप जिस ग्रह का पुष्पार्चन या पूजा करना चाहते है अलग-अलग भी कर सकते हैं।

(1) सूर्य की पूजा रविवार को प्रातः सूयोर्दय से पहले करें, तथा गाय को दान के रूप में गुड़ का पिण्ड खिलायें।

(2) चन्द्र की पूजा या पुष्पार्चन सोमवार को चन्द्रोदय के पूर्व आरम्भ करना चाहिये तथा किसी दरिद्र नारायण को चावल देना चाहिये।

(3) मंगल को ग्रह की पूजा अथवा पुष्पार्चन मंगलवार के सूर्योदय से पहले करनी चाहिये मंगल के निमित गेंहू का दान करना चाहिये।

(4) बुध को ग्रह की पूजा अथवा पुष्पार्चन बुधवार के सूर्योदय से पहले करनी चाहिये बुध के निमित हरा या नीला वस्त्र दान देना चाहिए।

(5) बृहस्पति ग्रह की पूजा अथवा पुष्पाचर्न बृहस्पतिवार को सन्ध्या के समय करना चाहिये, बृहस्पति के निमित कुछ शक्कर दान के रूप गाय को खिलाना चाहिए।

(6) शुक्र की पूजा अथवा पुष्पार्चन शुक्रवार को सूर्योदय से पहले करनी चाहिये दान के रूप में थोड़ा चावल देना चाहिये।

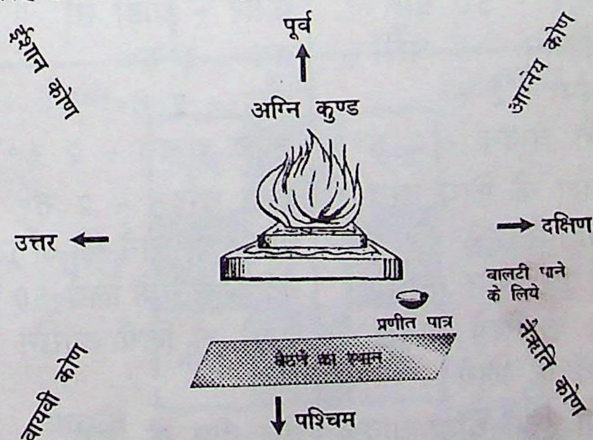
(7) शनि की पूजा अथवा पुष्पार्चन शनिवार को प्रातः सूर्योदय से पहले करनी चाहिये और दान के रूप में थोड़ा तेल देना चाहिये।

(8) राहु की पूजा अथवा पुष्पार्चन रविवार को प्रातः सूर्योदय से पहले करनी चाहिये और दान के रूप में थोड़ा सा गेहूँ देना चाहिये।

(9) केतु की पूजा अथवा पुष्पार्चन रविवार को प्रातः सूर्योदय से पहले करनी चाहिये और दान के रूप में थोड़ा तिल अथवा तेल देना चाहिये।

ओंकार नाथ शास्त्री

स्वाहकार के लिए अग्नि कुण्ड का चित्र



नव ग्रह पूजा की सामग्रीः-

कलश - 1	तिल - 1/2 किलो
दीप - 1	कन्द - 3 अदद
टाकू - 5 अदद	श्रीफल - 3 अदद
अखरोट - 50	स. इलायची - 2 तोले
शकर - 2 किलो	दाल चीनी - 2 तोले
जव - 5 किलो	रूंग - 2 तोले
बादाम - 1/2 किलो	चूना - 1/2 किलो
नीलोफर - 1/2 किलो	देसी घी - 2 किलो
खजूर - 1/2 किलो	लकड़ी - 10 किलो
नबाद - 1/2 किलो	गंगा जल - थोड़ा सा
नारजील - 1/2 किलो	फूल - 2 किलो
कण्ठगण - 100 ग्राम	दूध - 1 पाव
धूप - 2 डिब्बे	दही - 1 पाव
मोली नारीवन-1/2 पाव	कपूर - 1 डिब्बा
सिन्दूर - 50 ग्राम	केसर - थोड़ा सा
सर्वौषधि - 3 आरी	ब्रय - 2 रु०
सर्शप - 2 रु०	लाय - 2 रु०
रक्त चन्दन - 2 रु०	सफेद चन्दन - 2 रु०
कलश के लिये वस्त्र	रक्त चन्दन - 2 रु०
यज्ञोपवीत	पवित्र या सोने की अंगूठी
दर्भ या द्रमुन घास	बेदी बनाने के लिये-50 ईंटे
जंग के लिये चावल	बैठने के लिये आसन
अर्घ्य के लिये -	रूई
धोया हुआ थोड़ा चावल	तेल दीप के लिये

नवग्रह मण्डल

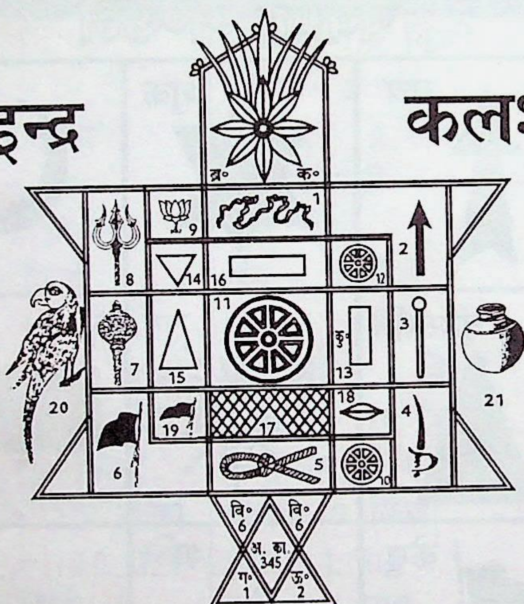
बुध	शुक्र	चन्द्रमा
बृहस्पति	सूर्य	मंगल
केतु	शनि	राहु

ईशान पूर्व आग्नेय

	बुध	शुक्र	चन्द्र	
उत्तर	गुरु	सूर्य	भौम	दक्षिण
	केतु	शनि	राहु	

वायवी पश्चिम नैऋति

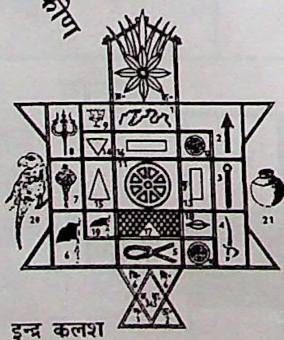
इन्द्र कलश



कलश पूजा का चित्र

ईशान कोण

आग्नेय कोण



इन्द्र कलश



क्षेत्र पाल

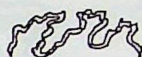


दीप

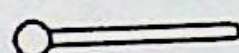


प्रेणीत पात्र

बैठने का स्थान

1. इन्द्राय वज्र हस्ताय 

2. अग्नये शक्ति हस्ताय 

3. यमाय दण्ड हस्ताय 

4. नैऋतिये खडगहस्ताय 

5. वरुणाय पाश हस्ताय 

6. वायवे ध्वज हस्ताय 

7. कुवेराय गदा हस्ताय 

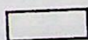
8. ईशानाय त्रिशूल हस्ताय 



9. ब्राह्मणे पद्म हस्ताय 

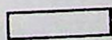
10. विष्णवे चक्र हस्ताय 

11. अगन्यादित्याभ्यां 

12. वरण चन्द्रमुभ्यां 

13. कुमार भौमाभ्यां 

14. विष्णु बुधाभ्यां 

15. इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां 

16. सरस्वति शुक्राभ्यां 

17. प्रजापति शनिश्चराभ्यां 

18. गणपति राहुभ्यां 

19. रुद्र केतुभ्यां 

20. ब्रह्म द्रुवाभ्यां

21. अनन्त अगस्ताभ्यां 

कलश पूजा

सब से पहले पूजामण्डप को सजाये-उत्तर पूर्व कोण जिस को ईशान कोण कहते हैं चूने से इन्द्र कलश बनायें। धूपदीप जला कर क्षेत्रपाल अपने-अपने स्थान पर रख कर यजमान कलश के सामने पूर्व की ओर मुँह करके बैठे, अपने दायें तरफ के दक्षिण पश्चिम कोण में जिसे नैऋति कोण कहते हैं एक छोटी कवली में तिल विष्टर या दर्भ के दो काण्ड रखें। यज्ञोपवीत धारण करें किसी लड़की से ज़ंग लगवाये और पढें:- **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।** अनामिका ऊँगली में पवित्र डालिये न मिलने पर सोने की अँगूठी भी डाल सकते है। अब यजमान कलश पूजा आरम्भ करे कलश पर फूल चढाते हुये पढे। **ऊँ भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं, भद्रं वदेम, शृणुयाम भद्रम्। तन्नो मित्रो वरुणो माम्-हन्ताम्-अदितिः सिन्धुः, पृथ्वी उतद्यौः। तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर आततम्। तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्।**

तीन बार गायत्री मन्त्र पढें:-ॐ गायत्र्यै नमः ॐभूभुर्वः स्वः, तत् सवितु-र्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् क्षेत्रपालों को अर्घ डालते हुये पढें। ॐ द्रष्टे नमः, उपद्रष्टे नमः, अनुद्रष्टे नमः, ख्यात्रे नमः, उपख्यात्रे नमः, अनुख्यात्रे नमः, शृण्वते नमः, उपशृण्वते नमः, जाताय नमः, जनिष्यमानाय नमः, भूते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमः, मनसे नमः, वाचे नमः, ब्रह्मणे नमः, शान्ताय नमः, तपसे नमः। अब एक कवली में थोड़ा सा पानी, तीन फूल विष्टर या दर्भ के दो काण्ड डाल कर, विष्टर से या दर्भ के दो काण्ड से कलश को जीवादान (छींटे मारते हुये पढें। अग्नेर् आयुर्-असि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृताः, तेन अस्माः अमुष्मा आयुर्-धेहि। इन्द्रस्य प्राणः स ते प्राणं ददातु यस्य प्राणः तस्मै ते स्वाहा। पितृणां प्राणाः तेते प्राणं ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। मरुतां प्राणास्तेते प्राणं ददतु येषां प्राणः तेभ्योवः स्वाहा। विश्वेषां देवानां प्राणः तेते प्राणं ददतु, येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। प्रजापतेः परमेष्ठिनः प्राणः तौते प्राणं दत्तां, ययोः प्राण ताभ्यां वां स्वाहा पूजा समग्री को छींटे मारते हुये पढें- "आपो हिष्ठा मयो भुवा, तान

ऊर्जेददात न। महे रणाय चक्षसे, यो वः शिव तमो रसः, तस्य भाजयते ह नः। उषतीर् इव मातरः, तस्मै अरंग मम वः यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा स नः कलश पर फूल चढाते हुये पढें "ऊँ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुर आततम् तत् विप्रासो विपन्यवो जाग्रवांसः समिन्धते विष्णो र्यत् परमं पदम्।। यो रुद्रो अग्नौयो अप्सु, य औषधीषु, यो वनस्पतिषु योरुद्रो विश्वा भुवना विवेश, तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु देवाः। गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपम-श्रवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन् ऊतिभिः सीद सादनं नमः।। चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुमित्रस्य वरुणस्यग्निः।। आप्राद्यावा पृथिवी चान्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुच। जातवेदसे सुनवाम सामं-अराती यतो निदहाति वेदाः, स नः स्पर्शत् अतिदुर्गाणि विश्व नावेव सिन्धुं दुरिता त्यग्निः, कलश याग देवताभ्यः हेरकादिभ्यः नमः।। कवली में मिश्री किशमिश आदि कलश के सामने नेवैद्य के निमित रखिये और पढिये, ऊँ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः अब पूजा करने वाला सामने रखी हुई थाली में

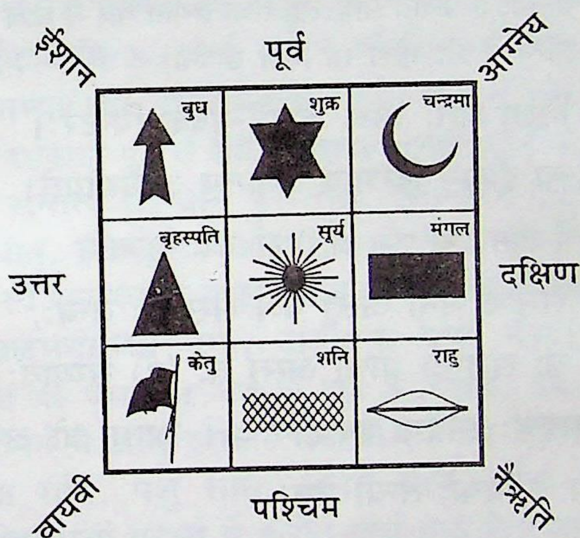
थोड़ा सा जल डालते हुये पढे- **अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः** पृथिवी के ऊपर आसन के रूप में, दो दर्भ काण्ड डालिये फिर पृथिवी माता को तिलक अर्घ पुष्प फूल डालते हुये पढें **प्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः।** अञ्जलि धारण करते हुये पढें **"पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।** गणेश का ध्यान कराते हुये पढें। **"शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रेतार्थ सिद्ध्यर्थं, पूजितोयः सुरैर् अपि सर्व विघ्न छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये। नमः गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुः साक्षात महेश्वरः। गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः। गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आद्यसिद्धेभ्यो नमः** (अब न्यास करना) **अ नाभौ, उ हृदि, म शिरसि, भूः पादयोः, भुवः हृदि, स्वः शिरसि, भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, भुवः तर्जनीभ्यां नमः, स्वः मध्यमाभ्यां नमः, जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, तपः सत्यं करतल कर**

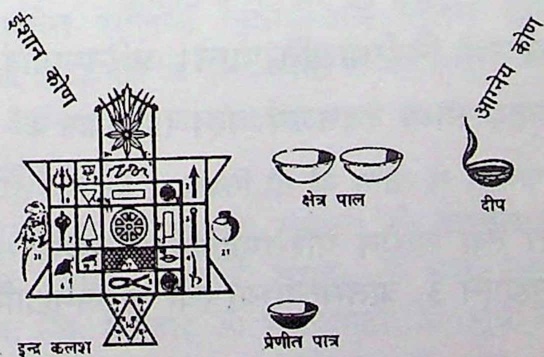
पृष्ठाभ्यां नमः, भूः पादयोः, भुवः जान्वोः, स्वः गुह्ये, भुवः शिरसे स्वाहा, स्वः शिखायै वषट्, महः कवचाय हुँ, जनः नेत्राभ्यां वौषट, तपः सत्यमस्त्राय फट्। चारों और तिल फेंकते हुये पढ़ें। **अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।** प्रणायाम् करके शरीर को पानी छिड़कते हुये पढ़ें। **"तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः, शंस्यो अरुरुषो धूर्तिः पाणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पतेः,** पवित्र लगायें **वसो पवित्रं असिशत धारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारं अयक्ष्मा वः** अपने आप को तिलक अर्घ पुष्प लगाते हुये पढ़े **परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्च भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै समा लभनं, गन्धो नमः, अर्घोनमः पुष्पं नमः** दीपक को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें **"स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्-तिमरापहः प्रसीद मम गोविन्द! दीपोयं प्रतिगृह्यताम्।** इसी प्रकार धूप को **वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः अधारः सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।** थाली में सूर्य भगवान् को तिलक अर्घ फूल चढ़ाते हुये पढ़ें, **नमो धर्म निधानाय नमः**

स्वकृतिसाखिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः। पानी की धारा थाली में डालते हुये पढें। यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर्भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै दीपो नमः धूपो नमः। ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ, अद्य अमुक मासस्य, अमुक पक्षस्य अमुक तिथौ, अमुक वासरे कलशयाग-देवताभ्यः हेरकादिभ्यः वटुक देवताभ्यः धूपदीप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः, दीपो नमः- तीन बार गायत्री मन्त्र पढें। ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् दो दर्भ के तिनके आसन के रूप में कलश पर डालते हुये पढें। कलशयाग देवतानां इदं आसनं नमः। दो दर्भ के तिनके अर्घसहित हाथ में रखकर आवाहन कीजिये, कलशयागदेवतानां हेरुकादीनां आवाहयष्यामि ॐ आवाहय प्रणयाम् करके कवली में लाय केसर सर्वौषधि, दर्भ जल लेकर छींटे मारते हुये पढें कलशयाग देवताभ्यः हेरुकादिभ्यः, वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः। पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से कवली में दर्भ, घी, दूध, दही, चावल के दाने जव सर्षप यह आठ वस्तुयें अर्घ्य

कहलाती है विष्ठर से छींटे देते हुये पढें **कलशयाग देवताभ्यः हेरुकादिभ्यः वटुकादिभ्यः इदं वो अर्घ्यं नमः,** तिलक के छीटे देते हुये पढें **कलश यागदेवताभ्यः समाल भनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः, क्षेत्रपालयो समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।। अन्नहीनं, क्रिया हीनं द्रव्यहीनं, मन्त्रहीनं, यत् गतं तत् सर्वम्-अछिद्रम्- अस्तु सम्पूर्णम्-अस्तु। कलशयाग देवताभ्यः अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः, हेरुकादिभ्यः अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः।** कलश पर कुछ दक्षिणा जल सहित डालते हुये पढें। **कलशयाग देवताभ्यः दक्षिणायै तिलहिरण्य रजत निष्कर्णे ददानि** और कुछ दक्षिणा डालते हुयें पढें। **एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु क्षेत्रपालयोः दक्षिणायै तिलहिरण्य निष्कर्णं ददानि।** फिर से कलश पर फूल चढाते हुये पढें। **तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिव्यीव चक्षुर-आततम्। तत् विप्रासो विपन्यवो जाग्रवांसः समिन्धते। विष्णो र्यत् परमं पदम्।**

कलश पूजा का चित्र





बैठने का स्थान

अग्नि कुण्ड पूजा

(अग्नि जला कर कुण्ड के ईशान कोण पर विष्टर, तिल, फूल और पानीवाला प्रणीत पात्र रखें तथा प्रणीत पत्र में तिल डाले तथा अग्नि में भी थोडा सा तिल छोडना)

पात्रं तिला क्षतैः मिश्रं कुसुम्-उदक विष्टरैः।

अग्नेश्च ईशान दिग्भागे प्रणीतम् अभिद्यीयते।

(पात्र में तीन दफा फूल डालें) **सं व्वः सृजामि**

हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टाः तन्वः,

सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (2) संय्यावः

प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु

संप्रियः संप्रियाः तन्वो मम।

(दो दर्भकाण्ड जलाई हुई दाहें तरफ छोडना)

निर्दिग्धं रक्षो निर्दग्धारातिरपाग्ने। अग्निमामादं जहि निष्क्रव्यादं सीधा देवयजनं वह। (प्राणायाम करें फिर प्रणीत पात्र में से अग्नि को नौ छिडकियां देना)

1. ऋतं त्वा सत्येन परिसमूह्यामि 2. सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि 3. ऋतसत्याभ्यां त्वा परिसमूह्यामि 4.

ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि 5. सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि 6. ऋत सत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि 7. ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि 8. सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि 9. ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि (अग्नि के चार दिशाओं में चार दर्भकाण्ड पूर्व से डालें) यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि पुरस्तात्, दक्षिणतः, उत्तरतः, पश्चात्, इतिस्तरैः। (अग्नि कुण्ड को तिलक फूल लगाना) अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय समालभनंगन्धो नमः, अर्घोनमः पुष्पं नमः। (दर्भ काण्ड को जला कर जव के पात्र में लगाना) इदं हवि प्रजाननं मे अस्तु दशवीरं सर्वगणं स्वस्तये आत्मसनि, प्रजा सनि, पशु सनि, अभय सनि, लोक सनि, अग्निः प्रजां बहुलां मे करोतु अन्नं पयो रेतो अस्मासु दत्त घृतेन संलिप्य श्रृतम् अन्नं श्रृतम् अभिघार्य (आहुती देना) यहां से एक आदमी घी की आहुति देगा तथा दूसरा अग्निवत्र जो आपने इकट्ठा करके एक पात्र में रखी है की आहुति डालें।

"महाव्याहृतयः प्रभापतेः स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वाः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ महः स्वाहा। ॐ जनः स्वाहा,

ॐ तपः स्वाहा, ॐ सत्यं स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि धियो यो नः प्रचोदयात् (3) तीन बार पढें। फूल चढायें- अश्वमेधे घोराणामार्षम् आहुति डालते रहें और पढ़ें।

द्रष्ट्रे नम, उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः, ख्यात्रे नमः, उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नमः, शृण्वते नमः, उपशृण्वते नमः, सते नमोऽसेत नमो, जाताय नमो, जनिष्यमाणाय नमो, भूताय नमो, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः, शान्ताय नमः तपसे नमः। भूतं भव्यं भविष्यत् वषट् स्वाहा नम, ऋक्साम यर्जुवषट स्वाहा नमो, गायत्री त्रिष्ट उब्जगती वषट् स्वाहा नमः, पृथिवि अन्तरिक्षं द्यौर्वषट् स्वाहा नमः, अन्नं कृषिः वृष्टि र्वषट् स्वाहा नमः। पिता पुत्रः पौत्रो वषट् स्वाहा नमः, प्राणो व्यानोऽपानो वष्ट स्वाहा नमो, भूर्भुवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः।

पृश्न्याः पयोसि, तस्य ते क्षीयमाणस्य, पिन्वमानस्य पिन्वमानं निर्वपामि। पञ्चानान्त्वा देवताभ्यो गृहणामीति गृहीत्वा यतीनां भृगूणां स्यूमरश्मेः पृथुरश्मेरिति। पञ्चानान्त्वा वातानां धर्त्राय गृहणामि पञ्चानान्त्वा सलिलानां धर्त्राय गृहणामि। पञ्चानां त्वा पृष्ठानां

धर्त्राय गृहणामि। पञ्चानान्त्वा दिशां धर्त्राय गृहणामि। पञ्चानान्त्वा पञ्चजनानां धर्त्राय गृहणामि। भूरस्माकं हव्यन्देवानां आशिषो यजमानस्य चरोस्त्वा पञ्चबिलस्य धर्त्राय गहणामि, धामासि, प्रियन्देवामनाधृष्टं देवयजनं देवता भिस्त्वा देवताम्यो गृह्णामि। (आज्यर्दशन करना) आत्मनो वाड्मनः कायोपार्जितपाप निवारणार्थं अग्नये वैश्वानराय इदमाज्यमर्पयामि नमः। (फूल हाथ में ले लें तथा अग्नि में डालें) (ज्वाला मण्डित आकाशं साक्षमाला कमण्डलम् त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रं च होमकाले तु चिन्तयेत्। शुकपृष्ठ गतं देवं शक्ति हस्तं चतुर्भुजम्, मृगाजिनेन सन्नद्धं पुण्पवर्ण हुताशनम्। (आहुति डालें) अग्ना अग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अधिराजः एषः। स नः सुनुः सयुजायुजा च मा देवानां रीषिभ्दागधेयं मोऽस्मभ्यं रीरिषभ्दागधेयं स्वाहा।। प्रजापते न हि त्वदन्य एता विश्वा जातानि परिता बभूव यत्कामास्ते जुहुमः तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। आयुषः प्राणं सन्तनु स्वाहा। प्राणाद् व्यानं सन्तनु स्वाहा व्यानादपानं सन्तनु स्वाहा। अपानाच्चक्षुः सन्तनु स्वाहा। चक्षुषः श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा। श्रोत्राद्वाचं सन्तनु स्वाहा। वाच आत्मानं सन्तनु स्वाहा। आत्मानः पृथिवीं सन्तनु स्वाहा। पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा। अन्तरिक्षात्दिवं सन्तनु स्वाहा। दिवः स्वः

सन्तनु स्वाहा (आकूतमिति त्रयोदश) आकूतं च स्वाहा। आकूतिश्च स्वाहा। आधीतं च स्वाहा। आधीतिश्च स्वाहा। विज्ञातं च स्वाहा। विज्ञातिश्च स्वाहा। चितं च स्वाहा। चितिश्च स्वाहा। नाम च स्वाहा। क्रतुश्च स्वाहा। दार्शश्चस्वाहा। पौर्णमासश्च स्वाहा। प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायत् शदुग्रः पृतनाज्येषु। तेर्भिाजं वाजयन्तो जयेम तेनेमा विश्वाः पृतना अभिष्यामस्वाहा। बृहस्पति पुरोहिता देवा देवानां देवा देवाः प्रथमजा देवा देवेषु पराक्रमध्वं स्वाहा। प्रथमा द्वितीयेषु द्वितीयास्तृतीयेषु त्रिरेकादशास्त्र यास्त्रिंशा अनु च आरभे स्वाहा। इदं शकेयं यदिदं करोमि स्वाहा। ते मानव ते मा जिन्वतास्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षेत्रे स्यामा शिष्यस्यां पुराधायामस्यां देव हूत्यां स्वाहा। राष्ट्र भृतामौपनिषदानामृषीणाम्। ऋताषाड् ऋतधामा ग्निर्गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहावट् तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदा नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। संहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्।

तस्य मरीचयोऽप्सरस आग्रुवो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य दक्षिणा अप्सरस स्तवा नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। प्रजा पतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य ऋक्क सामान्यप्सरसः एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्यापो ऽप्सरस उवर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। स नो भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा विराट् पते अस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ स्वाहा। अग्निवृत्राणि जङ्घ नद् द्रविणस्युपिण्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः स्वाहा। त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि क्रतुः स्वाहा।

आश्रावितमत्याश्रावितं वषट् कृतम्, अवषट् कृतमऽननूक्तमत्यनूक्तं च। यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो यच्च हीनमग्निष्टानि प्रविदन्नेतु कल्पयन् स्वाहा।

नमस्कार

1. यदि आपको विजयेश्वर पंचांग के विषय में कुछ पूछना हो
2. यदि आप को धर्म-शास्त्र कर्मकाण्ड अथवा किसी प्रकार की कोई धार्मिक समस्या हो
3. यदि आप सम्पादक से मिलना चाहते हो

?तो

 : 2555607

 : 9419133233

पर सम्पर्क करें।

मिलने का समय :

प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक।

सूर्यस्तोत्रम्

अस्य श्रीआदित्य स्तोत्रस्य आङ्गिरस ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। सूर्यो देवता। सूर्यप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

नवग्रहाणां सर्वेषां, सूर्यादीनां पृथक् पृथक्।
पीडा च दुःसहा राजन्, जायसे सततं नृणाम्।।
पीडानाशाय राजेन्द्र, नामानि शृणु भास्वतः।
सूर्यादीनां च सर्वेषां, पीडा नश्यति शृण्वतः।।
आदित्यः सविता सूर्यः, पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः।
भगस्त्वष्टाऽर्यमा हंसो, हेलिस्तेजोनिधिर्हरिः।।
दिननाथो दिनकरः, सप्तसप्तिः प्रभाकरः।
विभावसुः वेदकर्ता, वेदाङ्गो वेदवाहनः।।
हरिदश्वः कालवक्त्रः, कर्मसाक्षी जगत्पतिः।
पद्मिनीबोधको भानुः, भास्करः करुणाकरः।।
द्वादशात्मा विश्वकर्मा, लोहिताङ्गस्तमोनुदः।
जगन्नाथोऽ रविन्दाक्षः, कालात्मा कश्यपात्मजः।।
भूताश्रयो ग्रहपतिः, सर्वलोक नमस्कृतः।
जपाकुसुम-संकाशो, भास्वान-दितिनन्दन।।
जगत्कर्ता जगत्साक्षी, शनैश्चरपिता जयः।
सहस्ररश्मिस्तरणिः, भगवान् भक्तवत्सलः।।

विवस्वान् आदिदेवश्च, देवदेवो दिवाकरः।
धन्वन्तरि र्व्याधिहर्ता, ददुकुष्ठविनाशकः।।
नारायणो महादेवो, रुद्रः पुरुष ईश्वरः।
जीवात्मा परमात्मा च, सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः।।
य एतैर्नामभिर्मर्त्यो, भक्त्या स्तौति दिवाकरम्।
सर्वपाप विनिर्मुक्त, सर्वरोग विवर्जितः।।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान्, जायवे स न संशयः।
रविवारे पठेद्यस्तु, नामान्येतानि भास्वतः।।
पीडाशान्तिर्भवेत्तस्य, ग्रहणां च विशेषतः।
सद्यः सुखमवाप्नोतिच आयुर्दीर्घं च नीरुजम्।।

इति आदित्यस्तोत्रं संपूर्णम्।

सूर्यकवचम्

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, सूर्यो देवता, सूर्यप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

श्री सूर्य उवाच

सांय सांब महाबाहो, शृणु मे कवचं शुभम्।
त्रैलोक्यमंगलं नाम, कवचं परमाद्भुतम्।।
यज्ज्ञात्वा मंत्रवित्सम्यक्, फलं प्राप्नोति निश्चितम्।
युद्धृत्वा च महादेवो, गणानामधिपोऽभवत्।।

पठनाद्धारणाद्विष्णुः, सर्वेषां पालकः सदा।
एवमिन्द्रादयः सर्वे, सर्वैश्वर्यमवाप्नुवन्।।
कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा, छंदोऽनुष्टुबुदाहृतः।
श्रीसूर्या देवता चात्र, सर्वदेवनमस्कृतः।।
एकाक्षरो महामंत्रः, श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः।
गुह्यागुह्यतरो मंत्रो, वाञ्छाचिंतामणिः स्मृतः।।
शीर्षादिपादपर्यंतं सदा, पातु मनूत्तमः।
इति ते कथितं दिव्यं, त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।।
श्रीप्रदं कांतिदं नित्यं, धनारोग्यविवर्धनम्।
कुष्ठादिरोगशमनं, महाव्याधिविनाशनम्।।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यम्, अरोगी बलवान् भवेत्।
तत्पुनः किमिहोक्तेन, यद्यन्मनसि वर्तते।।
तत्तत्सर्वं भवेत्तस्य, कवचस्य च धारणात्।
भूतप्रेतपिशाचाश्च, यक्षगंधर्वराक्षसाः।।
ब्रह्म राक्षस वेताला, न द्रष्टुमपि ते क्षमाः।
दूरादेव पलायंते, तस्य संकीर्तनादपि।।
भूर्जपत्रे समालिख्य, रोचनागरुकुंकुमैः।
रविवारे च संक्रांत्यां, सप्तम्यां च विशेषतः।
धारयेत्साधकश्रेष्ठः, श्रीसूर्यस्य प्रियो भवेत्।।
त्रिलोहमध्यगं कृत्वा, धारयेद्दक्षिणे करे।

शिखायामथवा कंठे, सोऽपि सूर्यो न संशयः।।
इति ते कथितं सांब, त्रैलोक्यमंगलाभिधम्।
कवचं दुर्लभं लोके, तव स्नेहात्प्रकाशितम्।।
अज्ञात्वा कवचं दिव्यं, यो जपेन्सूर्यमन्त्रकम्।
सिद्धिर्न जायते तस्य, कल्पकोटिशतैरपि।।

इति सूर्यकवचं संपूर्णम्।।

सूर्य नामावली

ॐ अरुणाय स्वाहः
ॐ करुणारससिन्धवे स्वाहः
ॐ आर्तरक्षकाय स्वाहः
ॐ आदिभूताय स्वाहः
ॐ अच्युताय स्वाहः
ॐ अनन्ताय स्वाहः
ॐ विश्वरूपाय स्वाहः
ॐ इन्द्राय स्वाहः
ॐ इन्दिरा-मन्दिराप्ताय स्वाहः
ॐ ईशाय स्वाहः
ॐ सुशीलाय स्वाहः
ॐ वसुप्रदाय स्वाहः

ॐ वासुदेवाय स्वाहः
ॐ शरण्याय स्वाहः
ॐ असमान-बलाय स्वाहः
ॐ आदित्याय स्वाहः
ॐ अखिलागम-वेदिने स्वाहः
ॐ अखिलज्ञाय स्वाहः
ॐ इनाय स्वाहः
ॐ इज्याय स्वाहः
ॐ भानवे स्वाहः
ॐ वन्दनीयाय स्वाहः
ॐ सुप्रसन्नाय स्वाहः
ॐ सुवर्चसे स्वाहः
ॐ वसवे स्वाहः
ॐ उज्ज्वलाय स्वाहः
ॐ उग्ररूपाय स्वाहः
ॐ ऊर्ध्वगाय स्वाहः
ॐ उद्यति् करणजालाय स्वाहः
ॐ ऊर्जस्वलाय स्वाहः
ॐ निर्जराय स्वाहः
ॐ ऊरुद्वयविनि र्मुक्तनिजसार ऋषिवन्द्याय स्वाहः

ॐ ऋक्षचक्रचराय स्वाहः
ॐ नित्यस्तुत्याय स्वाहः
ॐ खद्योताय स्वाहः
ॐ उज्जवल तेजसे स्वाहः
ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहः
ॐ शान्ताय स्वाहः
ॐ घनाय स्वाहः
ॐ लूनिताखिल दैत्याय स्वाहः
ॐ सत्यानन्द स्वरूपिणे स्वाहः
ॐ आर्त शरण्याय स्वाहः
ॐ भगवते स्वाहः
ॐ निखिलागम वेद्याय स्वाहः
ॐ गुणात्मने स्वाहः
ॐ बृहते स्वाहः
ॐ ऐश्वर्यदाय स्वाहः
ॐ हरिदश्वाय स्वाहः
ॐ दश दिक्संप्रकाशाय स्वाहः
ॐ विवस्वते स्वाहः
ॐ हृषीकेशाय स्वाहः
ॐ वीराय स्वाहः

ॐ जयाय स्वाहः
ॐ नित्यानन्दाय स्वाहः
ॐ रुग्घन्त्रे स्वाहः
ॐ ऋजु स्वभाववित्ताय स्वाहः
ॐ ऋकार मातृक वर्णरूपाय स्वाहः
ॐ ऋक्षाधिनाथमित्राय स्वाहः
ॐ लुप्दन्ताय स्वाहः
ॐ कान्तिदाय स्वाहः
ॐ कनत्कनक भूषणाय स्वाहः
ॐ अपवर्गप्रदाय स्वाहः
ॐ एकाकिने स्वाहः
ॐ सृष्टि स्थित्यन्त कारिणे स्वाहः
ॐ घृणिभृते स्वाहः
ॐ ब्रह्मणे स्वाहः
ॐ शर्वाय स्वाहः
ॐ शौरये स्वाहः
ॐ भक्तवश्याय स्वाहः
ॐ जयिने स्वाहः
ॐ जन्ममृत्यु जराव्याधि वर्जिताय स्वाहः
ॐ औन्नत्य पदसंचार रथस्थाय स्वाहः

ॐ असुरारये स्वाहः
ॐ अब्ज वल्लभाय स्वाहः
ॐ अचिन्त्याय स्वाहः
ॐ अच्युताय स्वाहः
ॐ परस्मै ज्योतिषे स्वाहः
ॐ रवये स्वाहः
ॐ शौरये स्वाहः
ॐ परमात्मने स्वाहः
ॐ वरेण्याय स्वाहः
ॐ भास्कराय स्वाहः
ॐ सौख्यप्रदाय स्वाहः
ॐ सूर्याय स्वाहः
ॐ नारायणाय स्वाहः
ॐ तेजोरूपाय स्वाहः
ॐ ह्रीं संपत्कराय स्वाहः
ॐ अं सुप्रसन्नाय स्वाहः
ॐ श्रेयसे स्वाहः
ॐ दीप्तमूर्तये स्वाहः
ॐ दिवाकराये स्वाहः
ॐ ओजस्कराय स्वाहः

ॐ जगदानन्दहेतवे स्वाहः
ॐ कमनीयकराय स्वाहः
ॐ अन्तर्वहिः प्रकाशाय स्वाहः
ॐ आत्मरूपिणे स्वाहः
ॐ अमरेशाय स्वाहः
ॐ अहस्कराय स्वाहः
ॐ हरये स्वाहः
ॐ तरुणाय स्वाहः
ॐ ग्रहाणां पतये स्वाहः
ॐ आदिमध्यान्त रहिताय स्वाहः
ॐ सकलजगतां पतये स्वाहः
ॐ कवये स्वाहः
ॐ परेशाय स्वाहः
ॐ श्रीं हिरण्यगर्भाय स्वाहः
ॐ ऐं इष्टार्थदाय स्वाहः
ॐ श्रीमते स्वाहः
ॐ सौख्यदायिने स्वाहः

चन्द्रस्तोत्रम्

अस्य श्रीचन्द्र स्तोत्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, चन्द्रपीत्यर्थं जपे विनियोगः।

चन्द्रस्य शृणु नामानि, शुभदानि महीपते।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान् मुच्यते नात्र संशयः।।
सुधाकरश्च सोमश्च, ग्लौरब्जेः कुमुद प्रियः।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्च, चन्द्रमा रोहिणीपतिः।।
शशी हिमकरो राजा, द्विजराजो निशाकरः।
आत्रेय इन्दुः शीतांशु, ओषधीशः कलानिधिः।।
जैवातृको रमाभ्राता, क्षीरोदार्णव संभवः।
नक्षत्रनायकः शंभु, शिरःचूडामणि र्विभुः।।
तापहर्ता नभोदीपो, नामान्येतानि यः पठेत्।
प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तः, तस्य पीडा विनश्यति।।
तद्दिने च पठेद्यस्तु, लभेत्सर्व समीहितम्।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेश्चन्द्रबलं सदा।।

इति श्रीचन्द्रोस्तोत्रम् संपूर्णम्।

चंद्रकवचम्

अस्य श्रीचंद्रकवचस्तोत्रमंत्रस्य गौतम ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीचन्द्रो देवता चंद्रपीत्यर्थं जपे विनियोगः।

समं चतुर्भुजं वन्दे, केयूरमुकुटोज्ज्वलम्।
वासुदेवस्य नयनं, शंकरस्य च भूषणम्।।
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं, शशि नः कवचं शुभम्।
शशी पातु शिरोदेशं, भालं पातु कलानिधिः।।
चक्षुषी चंद्रमाः पातु, श्रुति पातु निशायतिः।
प्राणं क्षपाकरः पातु, मुखं कुमुदबांधवः।।
पातु कण्ठं च मे सोमः, स्कंधौ जैवातृकस्तथा।
करौ सुधाकरः पातु, वक्षः पातु निशाकरः।।
हृदयं पातु मे चन्द्रो, नाभिं शंकरभूषणः।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः, कटिं पातु सुधाकरः।।
ऊरू तारापतिः पातु, मृगांको जानुनी सदा।
अब्धिजः पातु मे जंघे, पातु पादौ विधुः सदा।।
सर्वाण्यन्यानि चांगानि, पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः।
एतद्धि कवचं दिव्यं, भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि, सर्वत्र विजयी भवेत्।।

इति चंद्र कवचं संपूर्णम्।

चन्द्र नामावली

ॐ श्रीमते स्वाहः
ॐ चन्द्राय स्वाहः
ॐ निशाकराय स्वाहः
ॐ सदाराध्याय स्वाहः

ॐ साधुपूजिताय स्वाहः
ॐ जयोद्योगाय स्वाहः
ॐ विकर्तनानुजाय स्वाहः
ॐ विश्वेशाय स्वाहः
ॐ दोषाकराय स्वाहः
ॐ पुष्टिमते स्वाहः
ॐ अष्टमूर्तिप्रियाय स्वाहः
ॐ कष्टदारुकुठारकाय स्वाहः
ॐ प्रकाशत्मने स्वाहः
ॐ देवभोजनाय स्वाहः
ॐ कालहेतवे स्वाहः
ॐ कामदायकाय स्वाहः
ॐ अमर्त्याय स्वाहः
ॐ क्षपाकराय स्वाहः
ॐ क्षय वृद्धि समन्विताय स्वाहः
ॐ शुचये स्वाहः
ॐ जयिने स्वाहः
ॐ सुधामयाय स्वाहः
ॐ भक्तानामिष्टदाय काय स्वाहः
ॐ भद्राय स्वाहः
ॐ सामनान प्रियाय स्वाहः

ॐ शशधराय स्वाहः
ॐ ताराधीशाय स्वाहः
ॐ सुघानिघये स्वाहः
ॐ सत्पतये स्वाहः
ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहः
ॐ ज्योतिश्चक्र प्रवर्तकाय स्वाहः
ॐ वीराय स्वाहः
ॐ विदुषां पतये स्वाहः
ॐ दुष्टदूराय स्वाहः
ॐ सागरोद्भवाय स्वाहः
ॐ मुक्तिदाय स्वाहः
ॐ जगत् प्रकाश किरणाय स्वाहः
ॐ निस्सपत्नाय स्वाहः
ॐ निर्विकाराय स्वाहः
ॐ भूच्छायाऽच्छादिताय स्वाहः
ॐ भुवन प्रतिपालकाय स्वाहः
ॐ सौम्य जनकाय स्वाहः
ॐ सर्वागमज्ञाय स्वाहः
ॐ सनका दिमुनि स्तुयाय स्वाहः
ॐ सिताङ्गाय स्वाहः
ॐ श्वेत माल्यांबर धराय स्वाहः

ॐ दशाश्व, रथसंरूढाय स्वाहः
ॐ कुन्द पुष्पोज्जवला काराय स्वाहः
ॐ नयनाब्ज समुद्भवाय स्वाहः
ॐ आत्रेय गोत्रजाय स्वाहः
ॐ प्रियदायकाय स्वाहः
ॐ कर्कटप्रभवे स्वाहः
ॐ चतुररासनारूढाय स्वाहः
ॐ दिव्यवाहनाय स्वाहः
ॐ वसुसमृद्धिदाय स्वाहः
ॐ दान्ताय स्वाहः
ॐ शिष्ट पालकाय स्वाहः
ॐ अनन्ताय स्वाहः
ॐ स्वप्रकाशाय स्वाहः
ॐ द्युचराय स्वाहः
ॐ कलाधराय स्वाहः
ॐ कामकृते स्वाहः
ॐ मृत्यु संहारकाय स्वाहः
ॐ नित्यानुष्ठान दायकाय स्वाहः
ॐ क्षीणपापाय स्वाहः
ॐ जैवातृकाय स्वाहः
ॐ शुभ्राय स्वाहः

ॐ जयफलप्रदाय स्वाहः

ॐ सुरस्वामिने स्वाहः

ॐ भुक्तिदाय स्वाहः

ॐ भक्तदारिद्य भञ्चनाय स्वाहः

ॐ सर्वरक्षकाय स्वाहः

ॐ भवबन्ध विमाचकाय स्वाहः

ॐ भयान्तकृते स्वाहः

ॐ जगदानन्द कारणाय स्वाहः

ॐ निरामयाय स्वाहः

ॐ निराहाराय स्वाहः

ॐ भव्याय स्वाहः

ॐ ग्रह मण्डल मध्यस्थाय स्वाहः

ॐ ग्रहाधिपाय स्वाहः

ॐ द्युतिल काय स्वाहः

ॐ द्विज पूजिताय स्वाहः

ॐ उदाराय स्वाहः

ॐ नित्यो दयाय स्वाहः

ॐ नित्यानन्द फलप्रदाय स्वाहः

ॐ पलाशेध्म प्रियाय स्वाहः

ॐ भक्तिगम्याय स्वाहः

ॐ करुणारस संपूर्णाय स्वाहः

ॐ चतुराय स्वाहः
ॐ महेश्वर प्रियाय स्वाहः
ॐ मेरु गोत्र प्रदक्षिणाय स्वाहः
ॐ द्विजराजाय स्वाहः
ॐ औदुंबरनगा वासाय स्वाहः
ॐ मुनिस्तुत्याय स्वाहः
ॐ सकलार्तिहराय स्वाहः
ॐ साधुवन्दिताय स्वाहः
ॐ सर्वज्ञाय स्वाहः
ॐ सितच्छत्र ध्वजोपेताय स्वाहः
ॐ सित भूषणाय स्वाहः
ॐ श्वेतगन्धानु लेपनाय स्वाहः
ॐ ओं धनुर्धराय स्वाहः
ॐ अत्यन्त विनयाय स्वाहः
ॐ अव्ययाय स्वाहः
ॐ विवस्वत् मण्डलाज्ञेय वासाय स्वाहः
ॐ ग्रसितार्काय स्वाहः
ॐ द्विभुजाय स्वाहः
ॐ रोहिणीपतये स्वाहः
ॐ सकला ल्हादन कराय स्वाहः

मंगलस्तोत्रम्

अस्य मंगल स्तोत्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः। अग्नि देवता। गायत्री छन्दः भौमप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

अङ्गारकः शक्तिधरो, लोहिताङ्गो धरासुतः।
कुमारो मङ्गलो भौमो, महाकायो धनप्रदः।।
ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता, रोगकृद्रोगनाशनः।
विद्युत्प्रभो व्रणकरः, कामदो धनहृत् कुजः।।
सामगानप्रियो रक्त, वस्त्रो रक्तायतेक्षणः।
लोहितो रक्तवर्णश्च, सर्वकर्मावबोधकः।।
रक्तमाल्यधरो हेम, कुण्डली ग्रहनायकः।
नामान्येतानि भौमस्य, यः पठेत्सततं नरः।।
ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं, दरिद्र्यं च विनश्यति।।
धनं प्राप्नोति विपुलं, स्त्रियं चैव मनोरमाम्।
वंशोद्द्योतकरं पुत्रं, लभते नात्र संशयः।
योऽर्चयेदह्नि भौमस्य, मङ्गल बहुपुष्पकैः।।
सर्वा नश्यंति पीडाश्च, तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्।।

इति भौमस्तोत्रं संपूर्णम्।

मंगल कवचम्

अस्य श्री मंगल कवच स्तोत्र मंत्रस्य कश्यप ऋषिः।

अनुष्टुप छंदः। अंगारकी देवता। भौमपीडापरिहारार्थं जपे विनियोगः।

रक्तांबरो रक्तवपुः किरीटी, चतुर्भुजा मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली, सदा मम स्याद्वरदः प्रशांतः।।
अंगारकः शिरोरक्षेत्, मुखं वै धरणीसुतः।
श्रवौ रक्तांबरः पातु, नेत्रे मे रक्तलोचनः।।
नासां शक्तिधरः पातु, मुखं मे रक्तलोचनः।
भुजौ मे रक्तमाली च, हस्तौ शक्तिधरस्तथा।।
वक्षः पातु वरांगश्च, हृदयं पातु लोहिताः।
कटिं मे ग्रहराजश्च, मुखं चैव धरासुतः।।
जानुजंघे कुजः पातु, पादौ भक्तप्रियः सदा।
सर्वाण्यन्यानि चांगानि, रक्षेन्मे मेषवाहनः।।
य इदं कवचं दिव्यं, सर्वशत्रुनिवारणम्।
भूतप्रेतपिशाचानां, नाशनं सर्वसिद्धिदम्।।
सर्वरोगहरं चैव, सर्वसंपत्प्रदं शुभम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणां, सर्वसौभाग्यवर्धनम्।।
रोगबंधविमोक्षं च, सत्यम् एतत् न संशयः।

इति मंगलकवचं संपूर्णम्।।

मंगल नामावली

ॐ महीसुताय स्वाहः

ॐ मङ्गलाय स्वाहः

ॐ महावीराय स्वाहः

ॐ महाबल पराक्रमाय स्वाहः

ॐ महाभद्राय स्वाहः

ॐ महाभागाय स्वाहः

ॐ मङ्गलप्रदाय स्वाहः

ॐ महाशूराय स्वाहः

ॐ महारौद्राय स्वाहः

ॐ माननीयाय स्वाहः

ॐ दयाकराय स्वाहः

ॐ अपर्वणाय स्वाहः

ॐ तापत्रय विवर्जिताय स्वाहः

ॐ सुताम्रा क्षाय स्वाहः

ॐ सुखप्रदाय स्वाहः

ॐ वरेण्याय स्वाहः

ॐ सुखिने स्वाहः

ॐ विरूपाक्षाय स्वाहः
ॐ विभावसवे स्वाहः
ॐ क्षत्रपाय स्वाहः
ॐ क्षयवृद्धि विनिर्मुक्ताय स्वाहः
ॐ विचक्षणाय स्वाहः
ॐ चतुर्वर्ग फलप्रदाय स्वाहः
ॐ विज्वराय स्वाहः
ॐ मानदाय स्वाहः
ॐ क्रूराय स्वाहः
ॐ सुप्रतीपाय स्वाहः
ॐ सुब्रह्मण्याय स्वाहः
ॐ वक्र स्तंभादि गमनाय स्वाहः
ॐ वरदाय स्वाहः
ॐ वीरभद्राय स्वाहः
ॐ विदूरस्थाय स्वाहः
ॐ नक्षत्रचक्र संचारिणे स्वाहः
ॐ क्षात्रवर्जिताय स्वाहः
ॐ क्षमायुक्ताय स्वाहः

ॐ अक्षीणफलदाय स्वाहः

ॐ वीतरागाय स्वाहः

ॐ विश्वकारणाय स्वाहः

ॐ नानाभय निकृन्तनाय स्वाहः

ॐ नक्षत्र राशि सञ्चाराय स्वाहः

ॐ वन्दारु जन्मान्दाराय स्वाहः

ॐ कमनीयाय स्वाहः

ॐ कनत् कनक भूषणाय स्वाहः

ॐ भव्यफलदाय स्वाहः

ॐ वक्राकुञ्चित मूर्द्धजाय स्वाहः

ॐ दयासाराय स्वाहः

ॐ भयघ्नाय स्वाहः

ॐ भक्ताभय वर प्रदाय स्वाहः

ॐ शमोपेताय स्वाहः

ॐ शत्रुहन्ते स्वाहः

ॐ शरणागत् पोषणाय स्वाहः

ॐ सद्गुणाध्यक्षाय स्वाहः

ॐ समरदुर्जयाय स्वाहः

ॐ शिष्टपूज्याय स्वाहः
ॐ दुश्चेष्टा वारकाय स्वाहः
ॐ दुर्धराय स्वाहः
ॐ दुःस्वप्नहंत्रे स्वाहः
ॐ दुष्टगर्व विमोचनाय स्वाहः
ॐ भूसुताय स्वाहः
ॐ रक्तांबराय स्वाहः
ॐ भक्तपालन तत्पराय स्वाहः
ॐ गदाधारिणे स्वाहः
ॐ मिताशनाय स्वाहः
ॐ साहसिने स्वाहः
ॐ साधवे स्वाहः
ॐ दुष्टदूराय स्वाहः
ॐ सर्वकष्ट निवारकाय स्वाहः
ॐ दुःख भञ्जनाय स्वाहः
ॐ हरये स्वाहः
ॐ दुर्घर्षाय स्वाहः
ॐ भरद्वाज कुलोद्भूताय स्वाहः

ॐ भव्यभूषणाय स्वाहः
ॐ रक्त वपुषे स्वाहः
ॐ चतुर्भुजाय स्वाहः
ॐ मेशवाहाय स्वाहः
ॐ शक्तिशूलघराय स्वाहः
ॐ शस्त्रविद्या विशारदाय स्वाहः
ॐ शक्ताय स्वाहः
ॐ तार्किकाय स्वाहः
ॐ तपस्विने स्वाहः
ॐ तप्तकाञ्चन संकाशाय स्वाहः
ॐ गोत्राऽधि देवाय स्वाहः
ॐ गोत्रा विभूषणाय स्वाहः
ॐ तामसाधाराय स्वाहः
ॐ ताम्र लोचनाय स्वाहः
ॐ रक्तकिञ्जलक सन्निभाय स्वाहः
ॐ गोमध्यचराय स्वाहः
ॐ अङ्गारकाय स्वाहः
ॐ जनार्दनाय स्वाहः

ॐ थूने स्वाहः
ॐ त्रिकोण मण्डल गताय स्वाहः
ॐ शुचये स्वाहः
ॐ शूराय स्वाहः
ॐ शुभावहाय स्वाहः
ॐ मेघाविने स्वाहः
ॐ सुखप्रदाय स्वाहः
ॐ सर्वाभीष्ट फलप्रदाय स्वाहः
ॐ असृजे स्वाहः
ॐ अवन्तीदेशा धीशाय स्वाहः
ॐ सूर्ययाम्य प्रदेशस्थाय स्वाहः
ॐ याम्य हरिन् मुखाय स्वाहः
ॐ त्रिदशाधिप सन्नुताय स्वाहः
ॐ शुचिकराय स्वाहः
ॐ शुचिवश्याय स्वाहः
ॐ मेष वृश्चिक राशीशय स्वाहः
ॐ मितभाषणाय स्वाहः
ॐ सुरूपाक्षाय स्वाहः
ॐ वीतभयाय स्वाहः

बुधस्तोत्रम्

अस्य श्रीबुधतोत्रस्य प्रजापति-ऋषिः। त्रिष्टुप छन्दः। बुधो देवता बुधपीड़ानिवारणार्थं जपे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो, बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियङ्गकलिकाश्यामः, कञ्जनेत्रो मनोहरः।।
ग्रहोपमो रौहिणेयो, नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च, सौम्यो बुद्धिविवर्धनः।।
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी, ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दार, पुत्रधान्यपशुप्रदः ।।
लोकप्रियः सौम्यमूर्ति, र्गुणदो गुणिवत्सलः।।
पञ्चविंशतिनामानि, बुधस्यै तानि यः पठेत्।
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य, पीडाः सर्वा विनश्यति।।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु, लभते स मनोगतम्।।

इति बुधस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

बुध कवचम्

अस्य श्रीबुधकवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः। बुधो देवता बुधपीडाशमनार्थं जपे विनियोगः।

बुधस्तु पुस्तकधरः, कुंकुमस्य समद्युतिः।
पीतांबरधरः पातु, पीतमाल्यानुलेपनः।।
कटिं च पातु मे सौम्यः, शिरौदेशं बुधस्तथा।
नेत्रे ज्ञानमयः पातु, श्रोत्रे पातु निशाप्रियः।।
घ्राणं गंधप्रियः पातु, जिह्वां विद्याप्रदो मम।
कंठं पातु विधोः पुत्रो, भुजा पुस्तकभूषणः।।
वक्षः पातु वरांगश्च, हृदयं रोहिणीसुतः।
नाभिं पातु सुराराध्यो, मध्यं पातु खगेश्वरः।।
जानुनी रौहिणेयञ्च, पातु जंघेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधनः पातु, पातु सौम्योऽखिलं वपुः।।
एतद्धि कवचं दिव्यं, सर्वपापप्रणाशनम्।
सर्वरोगप्रशमनं, सर्वदुःख निवारणम्।।
आयुरारोग्यधनदे, पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि, सर्वत्र विजयीभवेत्।।

इति श्री बुधकवचं संपूर्णम्।।

बुध नामावली

ॐ बुधाय स्वाहः

ॐ सौम्याय स्वाहः

ॐ शुभप्रदाय स्वाहः

ॐ दृढ़फलाय स्वाहः

ॐ सत्याऽऽवासाय स्वाहः

ॐ श्रेयसां पतये स्वाहः

ॐ सोमजाय स्वाहः

ॐ श्रीमते स्वाहः

ॐ वेदविदे स्वाहः

ॐ वेदान्त ज्ञान भास्कराय स्वाहः

ॐ विदुषे स्वाहः

ॐ ऋजवे स्वाहः

ॐ वीर्यवते स्वाहः

ॐ त्रिवर्गफलदाय स्वाहः

ॐ त्रिदशाधिप पूतिताय स्वाहः

ॐ बहुशास्त्रज्ञाय स्वाहः

ॐ बन्धविमोचकाय स्वाहः

ॐ वासवाय स्वाहः

ॐ बुधार्चिताय स्वाहः

ॐ सौम्यचिताय स्वाहः

ॐ दृढ़व्रताय स्वाहः
ॐ श्रुतिजाल प्रबोधकाय स्वाहः
ॐ सत्यवचसे स्वाहः
ॐ अव्ययाय स्वाहः
ॐ सुखदाय स्वाहः
ॐ सोमवंश प्रदीपकाय स्वाहः
ॐ वेद तत्त्वज्ञाय स्वाहः
ॐ विद्या विचक्षणाय स्वाहः
ॐ विद्वत् पीतिकराय स्वाहः
ॐ विश्वानुकूल सञ्चाराय स्वाहः
ॐ विशेष विनयान्विताय स्वाहः
ॐ विविधागम सारज्ञाय स्वाहः
ॐ विगत ज्वराय स्वाहः
ॐ अनन्ताय स्वाहः
ॐ बुद्धिमते स्वाहः
ॐ बलिने स्वाहः
ॐ वक्रातिवक्र गमनाय स्वाहः
ॐ प्रसन्नवदनाय स्वाहः

ॐ वरेण्याय स्वाहः

ॐ सत्यवते स्वाहः

ॐ सत्यबंधवे स्वाहः

ॐ सर्वरोग प्रशमनाय स्वाहः

ॐ वाणिज्य निपुणाय स्वाहः

ॐ वाताङ्गाय स्वाहः

ॐ स्थूलाय स्वाहः

ॐ स्थूल सूक्ष्मादि कारणाय स्वाहः

ॐ प्रकाशात्मने स्वाहः

ॐ गगन भूषणाय स्वाहः

ॐ विशालाक्षाय स्वाहः

ॐ चारुशीलाय स्वाहः

ॐ चपलाय स्वाहः

ॐ उदङ्मुखाय स्वाहः

ॐ मगधाधिपतये स्वाहः

ॐ सौम्य वत्सर संजाताय स्वाहः

ॐ महते स्वाहः

ॐ सर्वज्ञाय स्वाहः

ॐ शिवंकराय स्वाहः
ॐ वसुधाधिपाय स्वाहः
ॐ वन्द्याय स्वाहः
ॐ वाग्विलक्षणाय स्वाहः
ॐ सत्यसंकल्पाय स्वाहः
ॐ सदादराय स्वाहः
ॐ सर्वमृत्यु निवारकाय स्वाहः
ॐ वश्याय स्वाहः
ॐ वातरोगहृते स्वाहः
ॐ स्थैर्यगुणा ध्यक्षाय स्वाहः
ॐ अप्रकाशाय स्वाहः
ॐ घनाय स्वाहः
ॐ विधिस्तुत्याय स्वाहः
ॐ विद्वज्जन मनोहराय स्वाहः
ॐ स्वप्रकाशाय स्वाहः
ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहः
ॐ मखासक्ताय स्वाहः
ॐ हरये स्वाहः

ॐ सोम प्रियकराय स्वाहः
ॐ सिह्माधिरूढाय स्वाहः
ॐ शिखिवर्णाय स्वाहः
ॐ पीतवपुषे स्वाहः
ॐ खड्गचर्मधराय स्वाहः
ॐ कलुषहारकाय स्वाहः
ॐ अत्यन्तविनयाय स्वाहः
ॐ चांपेय पुष्पसंकाशाय स्वाहः
ॐ चारुभूषणाय स्वाहः
ॐ वीतभयाय स्वाहः
ॐ बन्धुप्रियाय स्वाहः
ॐ बाणमण्डल संश्रिताय स्वाहः
ॐ तर्कशास्त्र विशारदाय स्वाहः
ॐ प्रीति संयुक्ताय स्वाहः
ॐ प्रियभूषणाय स्वाहः
ॐ माधवासक्ताय स्वाहः
ॐ सुधिये स्वाहः
ॐ कामप्रदाय स्वाहः

ॐ मिथुनाधिपतये स्वाहः
ॐ घनफलाश्रयाय स्वाहः
ॐ पीतांबराय स्वाहः
ॐ पीतच्छत्र ध्वजाङ्कितताय स्वाहः
ॐ कार्यकर्त्रे स्वाहः
ॐ आत्रेय गोत्रजाय स्वाहः
ॐ विश्व पावनाय स्वाहः
ॐ चारणाय स्वाहः
ॐ वीतरागाय स्वाहः
ॐ विशुद्ध कनक प्रभाय स्वाहः
ॐ बन्धुयुक्ताय स्वाहः
ॐ अर्केशान निवासस्थाय स्वाहः
ॐ प्रशान्ताय स्वाहः
ॐ प्रियकृते स्वाहः
ॐ मेधाविने स्वाहः
ॐ कन्या राशि प्रियाय स्वाहः

बृहस्पतिस्तोत्रम्

अस्य श्री बृहस्पति स्तोत्रस्य गृथ्समद ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। बृहस्पति .र्देवता। बृहस्पति प्रीत्यर्थं प्राप्त्यर्थ जपे विनियोगः।

गुरुबृहस्पतिर्जीवः, सुराचार्यो विदांवरः।
वागीशो धिषणो दीर्घमश्रुः पीताम्बरो युवा।।
सुधादृष्टि र्ग्रहाधीशो, ग्रहपीडाप हारकः।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः, सुरार्च्यः कुङ्कुमद्युतिः।।
लोकपूज्यो लोकगुरु, र्नीतिज्ञो नीतिकारकः।
तारापतिश चाङ्गिरसो, वेदवैद्यपितामहः।।
भक्तया बृहस्पतिं स्मृत्वा, नामान्येतानि यः पठेत्।
अरोगी बलवान् श्रीमान्, पुत्रवान स भवेन्नरः।।
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः, पापं नश्यति नश्यति।
यः पूजयेत्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः।।
पुष्पदीपोपहारैश्च, पूजयित्वा बृहस्पतिम्।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च, पीडाशान्तिर्भवेत्गुरोः।।

इति बृहस्पतिस्तोत्रं संपूर्णम्।।

बृहस्पति कवचम्

अस्य श्रीबृहस्पतिकवचस्तोत्रमंत्रस्य ईश्वर ऋषिः। अनुष्टुप छंदः। गुरुर्देवता गं बीजं। श्रीशक्तिः। क्लीं कीलकम्। गुरुपीडोपशमनार्थं जपे विनियोगः।

अभीष्टफलदं देवं, सर्वज्ञं सुरपूजितम्।
अक्षमालाधरं शांतं, प्रणमामि बृहस्पतिम्।।
बृहस्पतिः शिरः पातु, ललाटं पातु मे गुरुः।
कर्णौ सुरगुरुः पातु, नेत्रे मेऽभीष्टदायकः।।
जिह्वां पातु सुराचार्यो, नासां मे वेदपारगः।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो, कंठं मे देवतागुरुः।।
भुजावांगिरसः पातु, करौ पातु शुभप्रदः।
स्तनौ मे पातु वागीशः, कुक्षिं मे शुभलक्षणः।।
नाभिं देवगुरुः पातु, मध्यं पातु सुखप्रदः।
कटिं पातु जगद्वंद्य, उरू मे पातु वाक्पतिः।।
जानु जंघे सुराचार्यो, पादौ विश्वात्मकस्तथा।
अन्यानि यानि चांगानि, रक्षेन्मे सर्वतो गुरुः।।
इत्येत त्कवचं दिव्यं, त्रिसंध्यं यः पठेश्वरः।
सर्वान्कामानवाप्नोति, सर्वत्र विजयी भवेत्।।

इति श्रीबृहस्पतिकवचं संपूर्णम्।।

गुरु नामावली

ॐ गुरवे स्वाहः
ॐ गोप्त्रे स्वाहः
ॐ गोपति प्रियाय स्वाहः
ॐ गुणवतां श्रेष्ठाय स्वाहः
ॐ अव्ययाय स्वाहः
ॐ जयन्ताय स्वाहः
ॐ जीवाय स्वाहः
ॐ जयावहाय स्वाहः
ॐ अध्वरासक्ताय स्वाहः
ॐ अध्वरकृत्पराय स्वाहः
ॐ गुणाकराय स्वाहः
ॐ गोचराय स्वाहः
ॐ गुणिने स्वाहः
ॐ गुरूणां गुरवे स्वाहः
ॐ जेत्रे स्वाहः
ॐ जयदाय स्वाहः
ॐ अनन्ताय स्वाहः

ॐ आंगिरसाय स्वाहः
ॐ विविक्ताय स्वाहः
ॐ वाचस्पतये स्वाहः
ॐ वशिने स्वाहः
ॐ वरिष्ठाय स्वाहः
ॐ चित्त शुद्धिकराय स्वाहः
ॐ चैत्राय स्वाहः
ॐ बृहत् स्थाय स्वाहः
ॐ बृहस्पतये स्वाहः
ॐ सुरा चार्याय स्वाहः
ॐ सुरकार्य कृतोद्यमाय स्वाहः
ॐ वश्याय स्वाहः
ॐ वाग्निचक्षणाय स्वाहः
ॐ श्रीमते स्वाहः
ॐ चित्र शिखण्डिजाय स्वाहः
ॐ बृहद्भानवे स्वाहः
ॐ अभीष्टदाय स्वाहः
ॐ सुराराध्याय स्वाहः

ॐ गीर्वाण पोषकाय स्वाहः
ॐ धन्याय स्वाहः
ॐ गिरिशाय स्वाहः
ॐ धीवराय स्वाहः
ॐ दिव्यी भूषणाय स्वाहः
ॐ धनुर् द्धराय स्वाहः
ॐ दया साराय स्वाहः
ॐ दारिद्य नाशनाय स्वाहः
ॐ दक्षिणायन संभवाय स्वाहः
ॐ देवाय स्वाहः
ॐ हरये स्वाहः
ॐ अङ्गिरःकुलसंभवाय स्वाहः
ॐ धीमते स्वाहः
ॐ गीष्पतये स्वाहः
ॐ अनघाय स्वाहः
ॐ धिषणाय स्वाहः
ॐ देवपूजिताय स्वाहः
ॐ दैत्यहन्त्रे स्वाहः

ॐ दयाकराय स्वाहः
ॐ धन्याय स्वाहः
ॐ धनुर् मीनाधिपाय स्वाहः
ॐ धनुर्बाणधराय स्वाहः
ॐ अङ्गिरो वर्षसंजाताय स्वाहः
ॐ सिन्धु देशाधिपाय स्वाहः
ॐ स्वर्णकायाय स्वाहः
ॐ चतुर्भुजाय स्वाहः
ॐ हेमवपुषे स्वाहः
ॐ पुष्यनाथाय स्वाहः
ॐ पुष्यराग मणिमण्डन मण्डिकाशाय स्वाहः
ॐ पुष्प समानाभाय स्वाहः
ॐ असमान बलाय स्वाहः
ॐ भूसुराभीष्टदाय स्वाहः
ॐ पुण्यविवर्धनाय स्वाहः
ॐ धनाध्यक्षाय स्वाहः
ॐ हेमाङ्गदाय स्वाहः
ॐ हेम भूषण भूषिताय स्वाहः

ॐ सर्ववेदान्तविदे स्वाहः
ॐ इन्द्राद्यमर संघपाय स्वाहः
ॐ सत्वगुणसंपत् विभावसवे विभावसवे स्वाहः
ॐ भूरियशसे स्वाहः
ॐ धर्मरूपाय स्वाहः
ॐ धर्मपालनाय स्वाहः
ॐ सर्वापद् विनिवारकाय स्वाहः
ॐ स्वमतानु गतामराय स्वाहः
ॐ ऋक्ष राशिमार्ग प्रचारवते स्वाहः
ॐ सदानन्दाय स्वाहः
ॐ सत्यसंघाय स्वाहः
ॐ सर्वज्ञाय स्वाहः
ॐ ब्राह्मणेशाय स्वाहः
ॐ सामनाधिक निंभुक्ताय स्वाहः
ॐ सर्वलोक वंशवदाय स्वाहः
ॐ ससुरासुर गन्धर्व वन्दिताय स्वाहः
ॐ सत्यभाषणाय स्वाहः
ॐ दयावते स्वाहः
ॐ लोकत्रयगुरवे स्वाहः

ॐ सर्वगाय स्वाहः
ॐ सर्वदाय स्वाहः
ॐ सत्य संकल्प मानसाय स्वाहः
ॐ धनदाय स्वाहः
ॐ सर्ववेदार्थ तत्त्वज्ञाय स्वाहः
ॐ सर्वपाप प्रशमनाय स्वाहः
ॐ ऋग्वेद पारगाय स्वाहः
ॐ सुरा चार्याय स्वाहः
ॐ सर्वा गमज्ञाय स्वाहः
ॐ ब्रह्मपुत्राय स्वाहः
ॐ ब्रह्मविद्या विशारदाय स्वाहः
ॐ बृहस्पतये स्वाहः
ॐ शुभलक्षणाय स्वाहः
ॐ श्रीमते स्वाहः
ॐ सर्वतोविभवे स्वाहः
ॐ सर्वदातुष्टाय स्वाहः
ॐ सर्वपूजिताय स्वाहः
ॐ सर्वेशाय स्वाहः

शुक्रस्तोत्रम्

अस्य श्रीशुक्रस्तोत्रस्य प्रजापति- ॠषिः। अनुष्टुप् छन्दः। शुक्रो देवता शुक्रप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

नमस्ते भार्गवश्रेष्ठ, दैत्यदानवपूजित।
वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च, वृष्टिकर्त्रे नमो नमः॥
देवयानिपितस्तुभ्यं, वेदवेदांगपारगः।
परेण तपसा शुद्धः, शंकरो लोकसुंदरः॥
प्राप्तो विद्यां जीवनाख्यां, तस्मै शुक्रात्मने नमः।
नमस्तस्मै भगवते, भृगुपुत्राय वेधसे॥
तारामंडलमध्यस्थ, स्वभासाभासितांबरः।
यस्योदये जगत्सर्वे, मंगलार्हे भवेदिह॥
अस्तं याते ह्यरिष्टं, स्यात् तस्मै मंगलरूपिणे।
त्रिपुरावासिनो दैत्यान्, शिवबाणप्रपीडितान्॥
विद्ययाऽजीवयच्छक्रो, नमस्ते भृगुनंदन।
ययातिगुरवे तुभ्यं, नमस्ते कविनंदन॥
बलिराज्यप्रदो जीव, स्तस्मै जीवात्मने नमः।
भार्गवाय नमस्तुभ्यं, पूर्वगीर्वाणवंदित॥
जीवपुत्राय यो विद्यो, प्रादात्तस्मै नमो नमः।
नमः शुक्राय काव्याय, भृगुपुत्राय धीमहि॥
यद्यत्प्रार्थयते जन्तुस्तत्तत्प्राप्नोति सर्वदा।

प्रातः काले प्रकर्तव्या, भृगुपूजा प्रयत्नतः।।
सर्वपापविनिर्मुक्तः, प्राप्नुयात् शिव, सन्निधिम्।।

इति श्रीशुक्रस्तोत्रं संपूर्णम्।।

शुक्र कवचम्

अस्य श्रीशुक्रकवचस्तोत्रमंत्रस्य भारद्वाज ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। शुक्रो देवता। शुक्रप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ॐ शिरो मे भार्गवः पातु, भालं पातु ग्रहाधिपः।
नेत्रे दैत्यगुरुः पातु, श्रोत्रे मे चन्दनद्युतिः।।
पातु मे नासिकां काव्यो, वदनं दैत्यवन्दितः।
जिह्वा मे चोशनाः पातु, कंठं श्रीकंठभक्तिमान्।।
भुजौ तेजोनिधिः पातु, कुक्षिं पातु मनोव्रजः।
नाभिं भृगुसुतः पातु, पातु मध्यं महीप्रियः।।
कटिं मे पातु विश्वात्मा, उरु मे सुरपूजितः।
जानू जाड्याहरः पातु, जंघे ज्ञानवतां वरः।।
गुल्फौ गुणनिधिः पातु, पातु पादौ वरांबरः।
सर्वाण्यंगानि मे पातु, स्वर्णमाला परिष्कृतः।।
य इदं कवचं दिव्यं, पठति श्रद्धयान्वितः।
नतस्य जायते पीडा, भार्गवस्य प्रसादतः।।

इति श्रीशुक्रकवच संपूर्णम्।।

शुक्र नामावली

ॐ शुक्राय स्वाहः

ॐ शुभगुणाय स्वाहः

ॐ शोभनाक्षाय स्वाहः

ॐ दीनार्ति-हारकाय स्वाहः

ॐ देवाभि वन्दिताय स्वाहः

ॐ कामपालाय स्वाहः

ॐ कल्याण दायकाय स्वाहः

ॐ शुभ्रवाहाय स्वाहः

ॐ भद्रगुणाय स्वाहः

ॐ भक्तपालनाय स्वाहः

ॐ भुवनाध्यक्षाय स्वाहः

ॐ सर्वलक्षण संपन्नाय स्वाहः

ॐ चारूरूपाय स्वाहः

ॐ निधये स्वाहः

ॐ नीतिविद्या धुरंधराय स्वाहः

ॐ समानाधिक निर्मुक्ताय स्वाहः

ॐ भृगवे स्वाहः

ॐ भूमि सुरपालन तत्पराय स्वाहः
ॐ मानदाय स्वाहः
ॐ मायातीताय स्वाहः
ॐ बलिप्रसन्नाय स्वाहः
ॐ बलिने स्वाहः
ॐ भव पाशंपरित्यागाय स्वाहः
ॐ घनाशयाय स्वाहः
ॐ शुचये स्वाहः
ॐ शुभलक्षणाय स्वाहः
ॐ शुद्धस्फटिक भास्वराय स्वाहः
ॐ दैत्यगुरवे स्वाहः
ॐ काव्यासक्ताय स्वाहः
ॐ कवये स्वाहः
ॐ शुभदाय स्वाहः
ॐ भ्रदमूर्तये स्वाहः
ॐ भार्गवाय स्वाहः
ॐ भोगदाय स्वाहः
ॐ भुक्ति मुक्ति फलप्रदाय स्वाहः

ॐ चारु चन्द्र निभाननाय स्वाहः
ॐ चारुशीलाय स्वाहः
ॐ निखिल शास्त्रज्ञाय स्वाहः
ॐ सर्वाव गुणवर्जिताय स्वाहः
ॐ सकलागम पारगाय स्वाहः
ॐ भोगकराय स्वाहः
ॐ मनस्विने स्वाहः
ॐ मान्याय स्वाहः
ॐ महायशसे स्वाहः
ॐ अभयदाय स्वाहः
ॐ सत्य पराक्रमाय स्वाहः
ॐ बलिबन्ध विमोचकाय स्वाहः
ॐ कंबु ग्रीवाय स्वाहः
ॐ कारुण्य रससंपूर्णाय स्वाहः
ॐ श्वेतांबराय स्वाहः
ॐ चतुर्भुज समन्विताय स्वाहः
ॐ अचिन्त्याय स्वाहः
ॐ नक्षत्र गण संचाराय स्वाहः

ॐ नीति मार्गदाय स्वाहः
ॐ हृषीकेशाय स्वाहः
ॐ भृगुसुताय स्वाहः
ॐ शान्तमतये स्वाहः
ॐ आधि व्याधिहराय स्वाहः
ॐ पुण्यदायकाय स्वाहः
ॐ पूज्याय स्वाहः
ॐ अजेयाय स्वाहः
ॐ विविधाभरणो ज्जवलाय स्वाहः
ॐ मन्दहासाय स्वाहः
ॐ मुक्ताफल समानाभाय स्वाहाः
ॐ घनाध्यक्षाय स्वाहः
ॐ कलाधराय स्वाहः
ॐ कल्याण गुणवर्द्धनाय स्वाहः
ॐ श्वेतवपुषे स्वाहः
ॐ अक्षमालाधराय स्वाहः
ॐ अक्षीण गुणभासुराय स्वाहः
ॐ नयदाय स्वाहः

ॐ वर्षप्रदाय स्वाहः
ॐ क्लेश नाशकराय स्वाहः
ॐ चिन्तितार्य प्रदाय स्वाहः
ॐ चित्त समाधिकृते स्वाहः
ॐ भूरि विक्रमाय स्वाहः
ॐ पुराण पुरुषाय स्वाहः
ॐ पुरुहूतादि सन्नुताय स्वाहः
ॐ विजिता रातये स्वाहः
ॐ कुन्दपुष्प प्रतीकाशाय स्वाहः
ॐ सर्वगीर्वाण गणसन्नुताय स्वाहः
ॐ महामतये स्वाहः
ॐ मुनि सन्नुताय स्वाहः
ॐ रथस्थाय स्वाहः
ॐ सूर्यप्राग्देश संचाराय स्वाहः
ॐ असुर पूजिताय स्वाहः
ॐ दुर्द्धराय स्वाहः
ॐ भाग्यदाय स्वाहः
ॐ भवपाश विमोचकाय स्वाहः
ॐ गोप्त्रे स्वाहः

ॐ गुण विभूषणाय स्वाहः
ॐ ज्येष्ठाय स्वाहः
ॐ शुचि स्मिताय स्वाहः
ॐ अनन्ताय स्वाहः
ॐ सर्वैश्वर्य प्रदाय स्वाहः
ॐ मुक्तिदाय स्वाहः
ॐ रत्न सिंहासनारूढाय स्वाहः
ॐ रजत प्रभाय स्वाहः
ॐ सुरशत्रु सुहृदे स्वाहः
ॐ तुला वृषभराशीशाय स्वाहः
ॐ धर्मपालकाय स्वाहः
ॐ भव्य चारित्राय स्वाहः
ॐ गौड देशेश्वराय स्वाहः
ॐ गुणिने स्वाहः
ॐ ज्येष्ठा नक्षत्र संभूताय स्वाहः
ॐ श्रेष्ठाय स्वाहः
ॐ अपवर्ग प्रदाय स्वाहः
ॐ सन्तानफल दायकाय स्वाहः

शनैश्चरस्तोत्रम्

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः। शनैश्चरो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः, कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरिः।
नित्यां स्मृतो यो हरते च पीड़ा, तस्मै नमः श्रीरविनन्दना च।।
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा, गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन, तस्मै नमः श्री रवि नन्दना च।।
नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा, वन्याश्च ये कीटपतंगभृंगा।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन, तस्मै नमः श्री रवि नन्दना च।।
प्रयागकूले यमुनातटे च, सरस्वतीपुण्यपले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मः, तस्मैनमः श्री रवि नन्दना च।।
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टः, तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहात्गतो यो न पुनः प्रयाति, तस्मै नमः श्री रवि नन्दना च।।
स्रष्टा स्वयंभूर्भुवः त्रयस्य, त्राता हरीशो हरते पिनांकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुः साममूर्तिः, तस्मै नमः श्री रवि नन्दना च।।
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते, नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेतु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः, प्राप्नोति निर्बाणपदं तदन्ते।।

इति श्रीशनैश्चरस्तोत्रं संपूर्णम्।

॥ शनि कवचम् ॥

अस्य श्रीशनैश्च्चर कवचस्तोत्र मंत्रस्य कश्यप ऋषिः।

अनुष्टुप् छंदः। शनैश्चरो देवता। शीं शक्तिः। शूं कीलकम्। शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।।

शृणुध्वगृषयः सर्वे, शनिपीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य, सौरेरिदम् अनुत्तमम्।।
कवचं देवतावासं, वज्रपंचरसंशकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं, सर्वसौभाग्य दायकम्।।
ॐश्रीशनैश्चरः पातु, भालं मे सूर्यनंदनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु, पातु कर्णौ यमानजः।।
नासां वैवस्वतः पातु, मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकंठश्च मे कंठ, भुजौ पातु महाभुजः।।
स्कंधौ पातु शनिश्चैव, करौ पातु शुभप्रदं।
वक्षः पातु यमभ्राता, कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।
पादौ मंदगतिः पातु, सर्वांगं पातु पिप्पलः।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि, रक्षेन्मे सूर्यनंदनः।।
इतयेतत्कवचं दिव्यं, पठेत्सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीडा, प्रीतो भवति सूर्यजः।।
अष्टमस्थे सूर्यसुते, व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठतो नित्यं, न पीडा जायते क्वचित्।।
इत्येतत्कवचं दिव्यं, सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।

इति शनैश्चरकवचं संपूर्णम्।

शनि नामावली

ॐ शनैश्चराय स्वाहः

ॐ सर्वाभीष्ट प्रदायिने स्वाहः

ॐ वरेण्याय स्वाहः

ॐ सौम्याय स्वाहः

ॐ सुरलोक विहारिणे स्वाहः

ॐ सुन्दराय स्वाहः

ॐ घनरूपाय स्वाहः

ॐ घनसार विलेपाय स्वाहः

ॐ मन्दाय स्वाहः

ॐ महनीयगुणात्मने स्वाहः

ॐ महेशाय स्वाहः

ॐ शर्वाय स्वाहः

ॐ चरस्थिर स्वभावाय स्वाहः

ॐ नीलवर्णाय स्वाहः

ॐ नीलाञ्जन निभाय स्वाहः

ॐ शान्ताय स्वाहः

ॐ शरण्याय स्वाहः

ॐ सर्वेशाय स्वाहः

ॐ सुरवन्द्याय स्वाह

ॐ सुखासनो पविष्टाय स्वाहः

ॐ घनाय स्वाहः

ॐ घनाभरण धारिणे स्वाहः

ॐ खद्योताय स्वाहः

ॐ मन्दचेष्टाय स्वाहः

ॐ मर्त्यपावन पादाय स्वाहः

ॐ छाया पुत्राय स्वाहः

ॐ शततूणीर धारिणे स्वाहः

ॐ अचंचलाय स्वाहः

ॐ नित्याय स्वाहः

ॐ नीलांबर विभूषाय स्वाहः

ॐ निश्चलाय स्वाहः

ॐ विधिरूपाय स्वाहः

ॐ भेदास्पद स्वभावाय स्वाहः

ॐ वैराग्यदाय स्वाहः

ॐ वीतरोगभयाय स्वाहः

ॐ विश्ववन्द्याय स्वाहः
ॐ गूढाय स्वाहः
ॐ कुरूपिणे स्वाहः
ॐ गुणाढ्याय स्वाहः
ॐ अविद्या मूलनाशाय स्वाहः
ॐ आयुष्य कारणाय स्वाहः
ॐ विष्णुभक्ताय स्वाहः
ॐ विविधागम वेदिने स्वाहः
ॐ वन्द्याय स्वाहः
ॐ वरिष्ठाय स्वाहः
ॐ वज्रांकुश धराय स्वाहः
ॐ वामनाय स्वाहः
ॐ श्रेष्ठाय स्वाहः
ॐ कष्टौघ नाशकर्त्रे स्वाहः
ॐ स्तुत्याय स्वाहः
ॐ भक्तिवश्याय स्वाहः
ॐ भानुपुत्राय स्वाहः
ॐ पावनाय स्वाहः

ॐ धनदाय स्वाहः
ॐ तनुप्रकाश देहाय स्वाहः
ॐ वेद्याय स्वाहः
ॐ विरोधाधार भूमये स्वाहः
ॐ वज्रदेहाय स्वाहः
ॐ वीराय स्वाहः
ॐ विपत्परं परेशाय स्वाहः
ॐ गृध्रवाहाय स्वाहः
ॐ कूर्माङ्गाय स्वाहः
ॐ कुत्सिताय स्वाहः
ॐ गोचराय स्वाहः
ॐ विद्याविद्या स्वरूपिणे स्वाहः
ॐ आपदुद्धर्त्रे स्वाहः
ॐ वशिने स्वाहः
ॐ विधि स्तुत्याय स्वाहः
ॐ विरूपाक्षाय स्वाहः
ॐ गरिष्ठाय स्वाहः
ॐ वरदा भयहस्ताय स्वाहः

ॐ ज्येष्ठापत्नी समेताय स्वाहः
ॐ मितभाषिणे स्वाहः
ॐ पुष्टिदाय स्वाहः
ॐ स्तोत्रगम्याय स्वाहः
ॐ भानवे स्वाहः
ॐ भव्याय स्वाहः
ॐ धनुर्मण्डल संस्थाय स्वाहः
ॐ धनुष्मते स्वाहः
ॐ तामसाय स्वाहः
ॐ अशेषजन वन्द्याय स्वाहाः
ॐ वशीकृत जनेशाय स्वाहः
ॐ खेचराय स्वाहः
ॐ घननीलांबराय स्वाहः
ॐ आर्यगण स्तुत्याय स्वाहः
ॐ नित्याय स्वाहः
ॐ गुणात्मने स्वाहः
ॐ नन्द्याय स्वाहः
ॐ धीराय स्वाहः

ॐ दीनार्ति हरणाय स्वाहः
ॐ आर्यजन गण्याय स्वाहः
ॐ क्रूरचेष्टाय स्वाहः
ॐ कण्ठत्र पुत्र शत्रुत्व कारणाय स्वाहः
ॐ परिपोषित भक्ताय स्वाहः
ॐ विशेषफलदायिने स्वाहः
ॐ पशूनां पतये स्वाहः
ॐ खगेशाय स्वाहः
ॐ काठिन्य मानसाय स्वाहः
ॐ नीलच्छत्राय स्वाहः
ॐ निर्गुणाय स्वाहः
ॐ निरामयाय स्वाहः
ॐ वन्दनीयाय स्वाहः
ॐ दिव्यदेहाय स्वाहः
ॐ दैन्यनाशकराय स्वाहः
ॐ क्रूराय स्वाहः
ॐ काम क्रोधकराय स्वाहः
ॐ भक्त संघ मनोभीष्ट फलदाय स्वाहः
ॐ परिभीतिहराय स्वाहः

राहुस्तोत्रम्

अस्य श्रीराहुस्तोत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहु देवता। राहुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

राहुर्दानवमन्त्री च, सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदाक्रोधी, चन्द्रादित्यविमर्दनः।।
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः, स्वर्भानुर्भानभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी, राकातिथ्यभिलाषुकः।।
कालदृष्टिः कालरूपः, श्रीकण्ठहृदयाश्रयः।
विधुंतुदः सैहिकेयो, घोररूपो महाबलः।।
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री, रक्तनेत्रो महोदरः।
पञ्चविंशति नामानि, स्मृत्वा राहुं सदा नरः।।
यः पठेन्महती पीडा, तस्य नश्यति केवलम्।
विरोग्यं पुत्रमतुलां, श्रियं धान्यं पशूंस्तथा।।
ददाति राहुस्तस्मै यः, पठते स्तोत्रमुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु, जीवेद्वर्षशतं नरः।।

इति राहुस्तोत्रं संपूर्णम्।

राहु कवचम्

अस्य श्रीराहुकवचस्तोत्रमंत्रस्य चन्द्रमा ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः। रां बीजं। नमः शक्तिः। स्वाहा कीलकम्। राहुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

प्रणमामि सदा राहुं, शूर्पाकारं किरिटिनम्।
सैंहिकेयं करालास्यं, लोकानामभयप्रदम्।।
नीलांबरः शिरः पातु, ललाटं लोकवंदितः।
चक्षुषी पातु मे राहुः, श्रोत्रे त्वर्धशरीरवान्।।
नासिकां मे धूम्रवर्णः, शूलपाणिर्मुखं मम।
जिह्वां मे सिंहिकासूनुः, कंठ मे कंठिनांध्रिकः।।
भुजंगेशो भुजौ पातु, नीलमाल्याम्बरः करौ।
पातु वक्षःस्थलं मंत्री, पातु कुक्षिं विधुंतुदः।।
कटिं मे विकटः पातु, उरू मे सुरपूजितः।
स्वर्भानुर्जानुनी पातु, जंघे मे पातु जाड्यहा।।
गुल्फौ ग्रहपतिः पातु, पादौ मे भीषणाकृतिः।
सर्वाण्यगानि मे पातु, नीलश्चन्दनभूषणः।।

इति राहुकवचं संपूर्णम्।।

राहु नामावली

ॐ राहवे स्वाहः
ॐ विधुन्तुदाय स्वाहः
ॐ तमसे स्वाहः
ॐ गार्ग्यायनाय स्वाहः
ॐ नीलजीमूत संकाशाय स्वाहः
ॐ खड्गखेटक धारिणे स्वाहः
ॐ शूलायुधाय स्वाहः
ॐ कृष्णध्वज पताकवते स्वाहः
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रा कराळकाय स्वाहः
ॐ गोमेधा भरणप्रियाय स्वाहः
ॐ काश्यपर्षि नन्दनाय स्वाहः
ॐ उल्कापातयित्रे स्वाहः
ॐ निधिपाय स्वाहः
ॐ शूर्पाकारा सनस्थाय स्वाहः
ॐ शात्रव प्रदाय स्वाहः
ॐ छाया स्वरूपिणे स्वाहः
ॐ द्विषच्छक्र च्छेदकाय स्वाहः

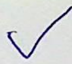
ॐ भयंकराय स्वाहः
ॐ तमोरूपाय स्वाहः
ॐ नीललोहिताय स्वाहः
ॐ नीलवसनाय स्वाहः
ॐ चण्डालवर्णाय स्वाहः
ॐ मेषभवाय स्वाहः
ॐ शूराय स्वाहः
ॐ उपरागकराय स्वाहः
ॐ देवाय स्वाहः
ॐ नीलपुष्प विहाराय स्वाहः
ॐ अष्टमग्रहाय स्वाहः
ॐ सैंहिकेयाय स्वाहः
ॐ सुरशत्रवे स्वाहः
ॐ फणिने स्वाहः
ॐ सुरारये स्वाहः
ॐ चतुर्भुजाय स्वाहः
ॐ वरदायक हस्तकाय स्वाहः
ॐ मेघवर्णाय स्वाहः

ॐ दक्षिणाशा मुखरथाय स्वाहः
ॐ विष ज्वालावृताऽऽस्याय स्वाहः
ॐ माषप्रियाय स्वाहः
ॐ भुजगेश्वराय स्वाहः
ॐ शूलिने स्वाहः
ॐ कृष्णसर्पराजे स्वाहः
ॐ अर्द्धशरीराय स्वाहः
ॐ रवीन्दुभीकराय स्वाहः
ॐ कठिनाङ्गकाय स्वाहः
ॐ करालास्याय स्वाहः
ॐ क्रूरकर्मणे स्वाहः
ॐ श्यामात्मने स्वाहः
ॐ किरीटिने स्वाहः
ॐ शनि सामन्त वर्त्मगाय स्वाहः
ॐ अश्व्यृ क्षभवाय स्वाहः
ॐ शनिवत् फलदाय स्वाहः
ॐ अपसव्य गतये स्वाहः
ॐ सोम सूर्यः छविविमर्दकाय स्वाहः

ॐ ग्रहश्रेष्ठाय स्वाहः
ॐ यातुधान कुलोद्भ वाय स्वाहः
ॐ देवजाति प्रविष्टकाय स्वाहः
ॐ घोराय स्वाहः
ॐ शुक्रमित्राय स्वाहः
ॐ माने गङ्गास्नान दात्रे स्वाहः
ॐ सद्‌गृहेऽन्यबल घृते स्वाहः
ॐ सिह्मजन्मने स्वाहः
ॐ राज्यदात्रे स्वाहः
ॐ जन्मकर्त्रे स्वाहः
ॐ मादका ज्ञानदाय स्वाहः
ॐ जन्महानिदाय स्वाहः
ॐ पञ्चमे शोकदायकाय स्वाहः
ॐ सप्तमे कलह प्रदाय स्वाहः
ॐ चतुर्थे वैरदायकाय स्वाहः
ॐ दशमे शोकदायकाय स्वाहः
ॐ कबंधमात्रदेहाय स्वाहः
ॐ गोविन्द वरपात्राय स्वाहः

ॐ क्रूराय स्वाहः
ॐ शनेर्मित्राय स्वाहः
ॐ अगोचराय स्वाहः
ॐ स्वगृहे प्रवलाढ्यदाय स्वाहः
ॐ चतुर्थ मातृनाशकाय
ॐ दानवाय स्वाहः
ॐ महाकायाय स्वाहः
ॐ विधुरिपवे स्वाहः
ॐ जन्मकन्या राज्यदात्रे स्वाहः
ॐ नवमे पितृहन्त्रे स्वाहः
ॐ द्यूने कलहप्रदाय स्वाहः
ॐ षष्ठे वित्तदात्रे स्वाहः
ॐ नवमे पापदात्रे स्वाहः
ॐ आदौ यशःप्रदात्रे स्वाहः
ॐ अन्ते वैरप्रदा सयकाय स्वाहः
ॐ गोचरचराय स्वाहः
ॐ पञ्चमे धिषणा शृङ्गदाय स्वाहः
ॐ बलिने स्वाहः
ॐ चन्द्रवैरिणे स्वाहः

ॐ सुरशत्रवे स्वाहः
ॐ शांभवाय स्वाहः
ॐ पाटीर पूरणाय स्वाहः
ॐ भक्तरक्षाय स्वाहः
ॐ सर्वाभीष्ट फलप्रदाय स्वाहः
ॐ कृष्णाय स्वाहः
ॐ विष्णु नेत्रारये स्वाहः
ॐ कालात्मने स्वाहः
ॐ घनेक कुत्प्रदाय स्वाहः
ॐ स्वर्भानवे स्वाहः
ॐ महा सौख्य प्रदायिने स्वाहः
ॐ शाश्वताय स्वाहः
ॐ पापग्रहाय स्वाहः
ॐ पूज्यकाय स्वाहः
ॐ पैठीनस कुलोद्भवाय स्वाहः
ॐ राहुमूर्तये स्वाहः
ॐ दीर्घाय स्वाहः
ॐ अतनवे स्वाहः



केतुस्तोत्रम्

अस्य श्रीकेतु स्तोत्रस्य मधुच्छन्दो ऋषिः, गायत्री छन्दः। केतु देवता। केतुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

केतुः कालः कलयिता, धूम्रकेतुर्विवर्णकः।
लोकेतुर्महाकेतुः, सर्वकेतुर्भयप्रदः ॥
रौद्रो रुद्रपियो रुद्रः, क्रूरकर्मा सुगन्धधृक्।
पलाशधूमसंकाशः, चित्रयज्ञोपवीतधृक् ॥
तारागणविमर्दी च, जैमिनेयो ग्रहाधिपः।
पञ्चविंशति नामानि, केतोर्यः सततं पठेत्॥
तस्य नश्यन्ति वाधाश्च, सर्वाः केतुप्रसादतः।
धनधान्यपशूनां च, भवेद्वृद्धिर्न संशयः ॥

इति केतो स्तोत्रम् संपूर्णम्॥

केतु कवचम्

अस्य श्रीकेतुकवचस्तोत्रमंत्रस्य त्र्यंबक ऋषिः। अनुष्टुप् छ़ंदः। केतुदेवता। कंबीजं। नमः शक्तिः। केतुरिति कीलकम्। केतुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

केतुं करालवदनं, चित्रवर्णं किरीटिनम्।
प्रणमामि सदा केतुं, ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम्॥

चित्रवर्णः शिरः पातु, भालं धूम्रसमद्युतिः।
पातु नेत्रे पिंगलाक्षः, श्रुति मे रक्तलोचनः।।
घ्राणं पातु सुवर्णाभः, चिबुकं सिंहिकासुतः।
पातु कंठं च मे केतुः, स्कंधौ पातु ग्रहाधिपः।।
हस्तौ पातु तुरश्रेष्ठः, कुक्षिं पातु महाग्रहः।
सिंहासनः कटिं पातु, मध्यं पातु महासुरेः।।
उरु पातु महाशीर्षो, जानुनी मेऽतिकोपनः।
पातु पादौ च मे क्रूरः, सर्वांगं नरपिंगल।।
य इदं कवचं दिव्यं, सर्वरोगविनाशनम्।
सर्वशत्रुविनाशं च, धारणाद्विजयी भवेत्।।

इति केतुकवचं संपूर्णम्।।

केतु नामावली

ॐ केतवे स्वाहः
ॐ शिरोमात्राय स्वाहः
ॐ नवग्रहयुताय स्वाहः
ॐ महाभीतिकराय स्वाहः
ॐ श्रीपिङ्गलाक्षकाय स्वाहः
ॐ तीष्णदंष्ट्राय स्वाहः
ॐ रक्तनेत्राय स्वाहः
ॐ तीव्रकोपाय स्वाहः

ॐ क्रूरकण्ठाय स्वाहः
ॐ छायाग्रह विशेषकाय स्वाहः
ॐ महाशीर्षाय स्वाहः
ॐ पुष्पवद् ग्रहिणे स्वाहः
ॐ गदापाणये स्वाहः
ॐ स्थूलशिरसे स्वाहः
ॐ ध्वजाकृतये स्वाहः
ॐ सिंहिकाऽसुरीगर्भ संभवाय स्वाहः
ॐ चित्रवर्णाय स्वाहः
ॐ फुल्लुधूम सकाशाय स्वाहः
ॐ महोदराय स्वाहः
ॐ चित्रकारिणे स्वाहः
ॐ महासुराय स्वाहः
ॐ क्रोधनिधये स्वाहः
ॐ अन्त्यग्रहाय स्वाहः
ॐ सूर्यारये स्वाहः
ॐ वरहस्ताय स्वाहः
ॐ चित्र ध्वज पताकाय स्वाहः
ॐ चित्र रथाय स्वाहः
ॐ कुलुत्थ भक्षकाय स्वाहः

ॐ उत्पातं जनकाय स्वाहः
ॐ मन्दसखाय स्वाहः
ॐ नाकपतये स्वाहः
ॐ जैमिनि गोत्रजाय स्वाहः
ॐ दक्षिणामुखाय स्वाहः
ॐ महासुर कुलोद्भवाय स्वाहः
ॐ लंबदेवाय स्वाहः
ॐ उत्पातरूप धारिणे स्वाहः
ॐ कालाग्नि सन्निभाय स्वाहः
ॐ गृहकारिणे स्वाहः
ॐ चित्रप्रसूताय स्वाहः
ॐ अष्टम ग्रहाय स्वाहः
ॐ सर्वव्याधि विनाशकाय स्वाहः
ॐ नवमे पाप दायकाय स्वाहः
ॐ उपराग खेचराय स्वाहः
ॐ तुरीये सुख प्रदाय स्वाहः
ॐ पापग्रहाय स्वाहः
ॐ प्राणनाथाय स्वाहः
ॐ द्वितीयेऽ स्टुट वाग्दात्रे स्वाहः
ॐ चित्र वस्त्रधराय स्वाहः

ॐ घोराय स्वाहः
ॐ शिखिने स्वाहः
ॐ वैडूर्या भरणाय स्वाहः
ॐ शुक्रमित्राय स्वाहः
ॐ गदाधराय स्वाहः
ॐ अन्तर्वेदीश्वराय स्वाहः
ॐ चित्रगुप्तात्मने स्वाहः
ॐ मुकुन्दवरपात्राय स्वाहः
ॐ घनवर्णाय स्वाहः
ॐ मृत्यु पुत्राय स्वाहः
ॐ अदृश्याय स्वाहः
ॐ नृपीडाय स्वाहः
ॐ सर्वोपद्रव वारकाय स्वाहः
ॐ अनलाय स्वाहः
ॐ अपसव्यपचारिणे स्वाहः
ॐ पञ्चमे शोकदाय स्वाहः
ॐ अतिपुरुष कर्मणे स्वाहः
ॐ तृतीय वैरदाय स्वाहः
ॐ स्फोटक कारकाय स्वाहः
ॐ पञ्चमे श्रमकारकाय स्वाहः

ॐ विषाकुलित वक्तकाय स्वाहः
ॐ कामरूपिणे स्वाहः
ॐ कुशेध्म प्रियाय स्वाहः
ॐ नवमे पितृनाशकाय स्वाहः
ॐ सुतानन्द निधानकाय स्वाहः
ॐ अनङ्गाय स्वाहः
ॐ उपान्ते कीर्तिदाय स्वाहाः
ॐ अष्टमे व्याधिकर्त्रे स्वाहः
ॐ जनने रोगदाय स्वाहः
ॐ ग्रहनायकाय स्वाहः
ॐ खेचराय स्वाहः
ॐ अशेष पूजिताय स्वाहः
ॐ नटाय स्वाहः
ॐ धूम्राय स्वाहः
ॐ अजिताय स्वाहः
ॐ सिंहासनाय स्वाहः
ॐ रविन्दु द्युतिनाशकाय स्वाहः
ॐ पीडकाय स्वाहः
ॐ विष्णु दृष्टाय स्वाहः
ॐ भक्तरक्षाय स्वाहः

ॐ विचित्र फलदायिने स्वाहः
ॐ सिंहदन्ताय स्वाहः
ॐ चतुर्थे मातृनाशाय स्वाहः
ॐ अन्त्ये वैरप्रदाय स्वाहः
ॐ सर्पाक्षिजाताय स्वाहः
ॐ कर्मराश्युद्भवाय स्वाहः
ॐ सप्तमे कलहप्रदाय स्वाहः
ॐ धने बहुसुखप्रदाय स्वाहः
ॐ ऊर्ध्व मूर्धजाय स्वाहः
ॐ पापदृष्टये स्वाहः
ॐ शांभवाय स्वाहः
ॐ शाश्वताय स्वाहः
ॐ शुभाशुभ फलप्रदाय स्वाहः
ॐ सुधापायिने स्वाहः
ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहः
ॐ केतुमुर्तये स्वाहः
ॐ अमराय स्वाहः
ॐ अमर्त्याय स्वाहः
ॐ असुरेश्वराय स्वाहः
ॐ वैचित्र्य क्पोतस्य ननदनाय स्वाहः
ॐ भक्ताभीष्ट फलप्रदाय स्वाहः

ज़रा ध्यान दें

इन से सम्पर्क करें।

1. **विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय**
तालाब तिलो (जैन कालोनी के नज़दीक)
जम्मू फोन : 2555763

2. **विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय**
(J. K. BOOK SHOP)
तालाब तिलो, गली नं० 1, जम्मू
फोनः 2505423, 9419240070

3. **विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय**
चिनार चौक (रूप नगर), जम्मू
फोन : 9419103424

(हम आपकी सेवा के लिये हर समय उपलब्ध हैं।)

विजयेश्वर प्रकाशन

स्व. प्रेम नाथ शस्त्री द्वारा



विजयेश्वर पंचांग कार्यालय
अजीत कालोनी
गोल गुजराल जम्मू
Ph. : 555607